दिसम्बर-२०२४ ◆ वर्ष १३ ◆ अंक ०८ ◆ उदयपुर

ओ३म्

सत्यार्थ सौरभ

मासिक
दिसम्बर-२०२४

सही समय पर सूर्योदय और,
सही समय सूर्यास्त।
मानव की सारी क्षमताएँ,
होतीं यहाँ नियंत्रित।
कैसे नियम नियंत्रित होते,
होते जीवन के सब कार्य।
दयानन्द सुलझाते कहते,
यह तो है ईश्वर का कार्य।।

शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति को समर्पित

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
नवलखा महल परिसर, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग,
उदयपुर-313001 (राज.)

₹१५ १५८

सफलता के 6 मूल मंत्र

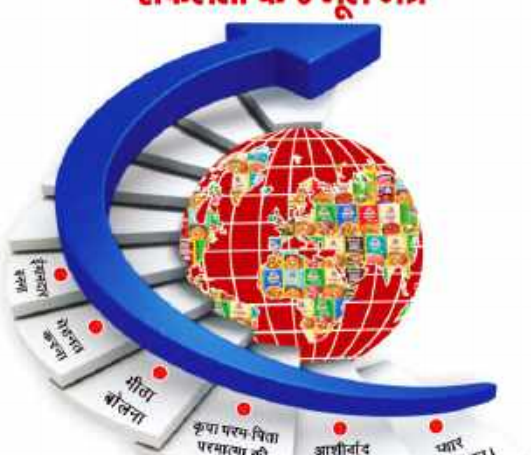

महाशय राजीव गुलाटी
चेयरमैन, महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लि०

MDH
मसाले
सेहत के रखवाले
असली मसाले सच-सच

महाशय धर्मपाल गुलाटी
संस्थापक चेयरमैन, महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लि०

For More Information Visit us on :

mdhspicesofficial | mdhspicesofficial | mdhspicesofficial | SpicesMdh

www.mdhspices.com

SCAN FOR MDH ORIGINAL RECIPES

सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं को अपने आँचल में समेटे, सम्पूर्ण परिवार के लिए, हर आयु समूह के लिए, पठनीय और समर्पित

न्यास का मासिक मुखपत्र

सत्यार्थ सौरभ

प्रमुख संरक्षक - सत्यार्थ सौरभ

डॉ. सुखदेव चन्द सोनी (अमेरिका)

परामर्शदाता संपादक मण्डल

डॉ. महावीर मीमांसक

डॉ. ज्वलन्त कुमार शास्त्री

डॉ.सोमदेव शास्त्री

डॉ. रघुवीर वेदालंकार

आचार्य वेदप्रिय शास्त्री

सम्पादक

अशोक आर्य

प्रबन्ध सम्पादक

भवानी दास आर्य

प्रबन्ध सहयोग (ग्राफिक्स डिजाईनर)

नवनीत आर्य (मो. 9314535379)

व्यवस्थापक

भँवर लाल गर्ग

सहयोग ◆	भारत	विदेश
संरक्षक	- 11000 रु.	$ 1250
आजीवन	- 1500 रु.	$ 300
पंचवर्षीय	- 600 रु.	$ 125
वार्षिक	- 150 रु.	$ 30
एक प्रति	- 15 रु.	$ 10

भुगतान राशि धनादेश/चैक/ड्राफ्ट श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें। अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया मेन ब्रांच दिल्ली गेट, उदयपुर खाता संख्या : 310102010041518 IFSC CODE- UBIN 0531014 MICR CODE- 313026001 में जमा करा अवश्य सूचित करें।

सृष्टि संवत्
१९६०८५३१२५
मार्गशीर्ष शुक्ल षष्ठी
विक्रम संवत्
२०८१
दयानन्दाब्द
२००

December - 2024

विज्ञापन शुल्क (प्रति अंक)
कवर 2 व 3 (भीतरी आवरण) रंगीन
5000 रु.
अन्दर पृष्ठ (श्वेत-श्याम)

पूरा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	3000 रु.
आधा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	2000 रु.
चौथाई पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	1000 रु.

सत्यार्थ-सौरभ में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नही है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र उदयपुर ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

समाचार २९

हलचल ३०

०४	वेद सुधा
०९	कार्य होते हैं शुभ अथवा अशुभ
१२	सुब्रह्मण्यम भारती
१८	स्वामी का बलिदान
१९	आचमन मन्त्र
२२	मैं आर्यसमाजी कैसे बना?
२५	च्यवनप्राश (अप्रतिम औषधि)
२७	कथा सरित- कहानी दयानन्द की
२८	सत्यार्थ मित्र बनें

स्वामी श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर | वर्ष - १३ | अंक -०८ | मुद्रण द्वारा - चौधरी ऑफसेट, (प्रा.लि.) ११-१२, गुरु रामदास कॉलोनी, उदयपुर

प्रकाशक
श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास
सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, गुलाबबाग, उदयपुर (राजस्थान) 313001
(0294) 4017298, 09314535379, 7976271159
www.satyarthprakashnyas.org, E-mail : satyarthsandesh@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा निदेशक– मुकेश चौधरी, चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा कार्यालय श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर–313001 से प्रकाशित, सम्पादक–अशोक कुमार आर्य

ओ३म्

वेद सुधा

परमात्मा हमारा और हम परमात्मा के प्यारे हो जाएँ

प्रियो नो अस्तु विश्पतिर्होता मन्द्रो वरेण्यः।
प्रियाः स्वग्न्यो वयम्।। - ऋग्वेद १/२६/७; सामवेद उ. ८/१/१

ऋषिः– आजीगर्तिः शुनःशेपः।। **देवता**– अग्निः।। **छन्दः**– गायत्री।।

विनय– हे मनुष्य भाइयों! हम अपने परम आत्मा को, परम को भूल गए हैं। हम यह भी भूल गए हैं कि हम स्वयं भी वास्तव में आत्मा रूप में हैं, आत्माग्नि हैं। इसीलिए हम इस संसार को परम तुच्छ धन-सम्पत्ति, पुत्र, वधू, सुख-आराम, शरीर तथा सौन्दर्य आदि विनश्वर वस्तुओं से तो इतना प्रेम करने लग गए हैं, इनमें इतने आसक्त, लिप्त और अनुरक्त हो गए हैं कि हमें इस गन्दी दलदल से अब ऊपर उठना असम्भव सा हो गया हैं, परन्तु जो हमारा असली स्वामी सखा और सब कुछ है, परम पवित्र प्रभु है, उसे हम दिन-रात के चौबीसों घण्टों में से कुछ क्षणों के लिए भी स्मरण नहीं करते। अब तो हम होश सम्भालें, जागें और अपने परम प्यारे अग्नि प्रभु को अपना लें। वही हम सब प्रजाओं का एकमात्र पति है, स्वामी है, वही हमें सब सुखों को देनेवाला 'मन्द्र' है, वही एकमात्र है जो हम सबका वरणीय है और वही है जो अपने परम यज्ञ द्वारा हम प्रजाओं को सब कुछ दे रहा है। अरे प्यारों! हम उसे छोड़कर कहाँ प्रेम करने लगे? सचमुच हमने अपनी प्रेमशक्ति का अभी तक घोर दुरुपयोग किया है। क्या प्रेम-जैसी पवित्र वस्तु हमें इन अशुचि, तुच्छ, अनित्य वस्तुओं में रखने के लिए ही दी गई थी? आओ, अब तो हम अपने प्रेम के लक्ष्य को पा लें और उस मन्द्र 'विश्वपति' को, वरेण्य 'होता' को अपना प्यारा बना लें अपना प्रेम उसे समर्पण कर दें।

किन्तु इस प्रकार प्रेमपथ पर चल देने पर हे भाइयों! हमें भी उसे रिझाना होगा, उसे प्रसन्न करना होगा, उसके प्रेम को अपने प्रति आकर्षित करना होगा, अर्थात् हमें भी उसका प्यारा बनाना होगा; और उसके प्यारे तो हम तभी बन सकते हैं जब हम 'स्वग्नि' बन जाएँ, उत्तम प्रकार की आत्माएँ बन जाएँ, अतः आओ, हम सब मनुष्य अपने उस परम प्यारे के लिए अपनी आत्माओं को शुद्ध करें। उस बृहद् अग्नि के लिए अपनी अग्नियों को उत्तम प्रकार की बना लेवें। अब हमारी आत्माग्नि से विश्वप्रेम की सुन्दर किरणें ही प्रसारित होवें, हमारी बुद्धि अग्नि में से सत्य की ज्योति ही निकले, हमारी मानसिक अग्नि सर्वकल्याण के उत्तम विचारों में ही प्रकाशित हुआ करे और हमारी चित्ताग्नि से पवित्र इच्छाएँ व भावनाएँ ही उठें। इस प्रकार हम उत्तम अग्नि वाले हो जाएँ, क्योंकि इसी प्रकार वह हमारा प्यारा हमसे प्रसन्न होगा। इसी प्रकार हमें अपने प्यारे को रिझाना है।

शब्दार्थ– वह **विश्वपति**= हम प्रजाओं का स्वामी **मन्द्रः**= आनन्द देने वाला **वरेण्यः**= और वरणीय **होता**= दाता अग्नि **नः**= हमें **प्रियः अस्तु**= प्यारा हो जाए तथा **वयम्**= हम भी **स्वग्नयः**= उत्तम अग्नियों वाले होकर **प्रियाः**= उसके प्यारे हो जाएँ।

लेखक- आचार्य अभयदेव विद्यालंकार
परिशोधक व सम्पादक- स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती
साभार- वैदिक विनय

Stop, think and take action, –नरेन्द्र मोदी (प्रधान मन्त्री)

मनुष्य अपना प्रत्येक कार्य सुख के लिए करता है। तकनीक के क्षेत्र में असाधारण प्रगति इसी की द्योतक है। परन्तु इसके दुरुपयोग की ऐसी-ऐसी भयानक घटनाएँ हमारे समक्ष उपस्थित हो रहीं हैं जो इस धारणा पर प्रश्न चिह्न लगा रही हैं।

कुछ दिनों पूर्व उत्तर प्रदेश के आगरा में एक मार्मिक घटना घटी। यह घटना किसी अनपढ़ महिला के साथ नहीं बल्कि स्कूल की अध्यापिका के साथ घटी। एक कॉल इनके पास आई जिस पर प्रोफाइल फोटो पर किसी पुलिस ऑफिसर का चित्र था। उसने बड़ी दबंग आवाज में कहा कि- 'तुम्हारी बेटी सेक्स रैकेट में पकड़ी गई है, मामले को रफा दफा करना चाहो तो तुम्हें एक लाख रुपए खर्च करने पड़ेंगे।' ऑफिसर ने आगे क्या बोला उस महिला के दिमाग में पहुँचा ही नहीं, बस एक ही बात उसके दिमाग में थी कि उसकी बेटी सेक्स रैकेट में फस गई है। उसने अपने बेटे को फोन किया, बेटे ने अपनी बहन से भी पुष्टि की कि वह ठीक है कहीं किसी रैकेट में नहीं फसी है, परन्तु महिला इतनी मानसिक रूप से टूट चुकी थी कि इस तनाव के कारण उसकी हार्ट अटैक से मृत्यु हो गई। यह एक फेक कॉल थी। दूसरी ओर से कॉल करने वाला पुलिस ऑफिसर भी नकली था।

इस प्रकार की घटनाएँ इन दिनों इस तेजी से बढ़ रही हैं जैसे कि बरसात के दिनों में गंगा नदी में बाढ़ आ जाती है। पर्याप्त जानकारी न होने के कारण लोग इसके शिकार हो रहे हैं। अतः हमने भी यह उचित समझा कि इससे सम्बन्धित कुछ बातें सत्यार्थ सौरभ के पाठकों के समक्ष भी रखें ताकि उनको, सम्बन्धित प्रश्नों पर अपेक्षित जानकारी प्राप्त हो सके।

एक अन्य घटना एक बहुत बड़े न्यूज चैनल के बड़े जिम्मेदार पद पर काम करने वाली महिला के साथ घटी। इनके पास एक फोन आया जिसमें एक व्यक्ति ने अपने को एक कोरियर कम्पनी का प्रतिनिधि बताते हुए कहा कि श्रीमती जी आपने एक कोरियर भेजा है जिसको मुम्बई एयरपोर्ट पर जप्त कर लिया गया है। यह कोरियर मुम्बई से ताइवान जा रहा था। इसमें सन्देहास्पद चीजें मिली हैं, इस कारण से इसको जप्त कर लिया गया है। इस ट्रांजैक्शन के साथ आपका आधार कार्ड जुड़ा हुआ है अतः हमने सत्यापन के लिए आपको फोन किया है।

महिला ने कहा कि उन्होंने अपने देश में भी कोई कोरियर नहीं कराया है, ताइवान की तो बात ही क्या? इस पर उस व्यक्ति ने कहा कि अगर आपने यह कोरियर नहीं भेजा है तो आप मुम्बई पुलिस से सम्पर्क कर अपनी शिकायत दर्ज करावें। मैं आपकी कॉल मुम्बई पुलिस को ट्रांसफर कर रहा हूँ आप वहाँ अपनी बात कहिए, इसके बाद उसने कोरियर से सम्बन्धित सारा विवरण लिखवाया। इस विवरण में क्रेडिट कार्ड का जो नम्बर लिखाया महिला ने कहा यह उनका नहीं है, न ही जिस व्यक्ति को ताइवान में यह पार्सल भेजा जा रहा है वह उसको जानती है। तब उस ऑफिसर ने कहा कि 'आप शायद इस विषय को गम्भीरता से नहीं ले रही हैं, इस पार्सल में ड्रग्स पाए गए हैं जो कि बहुत गम्भीर अपराध है।' जो महिला अपने चैनल के माध्यम से लोगों को साइबर ठगी के बारे में चेताती है, वह सारी होशियारी भूल जाती है उसका दिमाग सुन्न पड़ जाता है।

वह अपने विवरण में कहती हैं कि 'मुझे अब नयी आवाज आती है अब मुझे फोन पर कहा जाता है कि मैं

मुम्बई पुलिस से अधिकारी बोल रहा हूँ और वह फिर इस तरह से बात करने लगा जैसे कि मैं सचमुच में अपराधी हूँ। उसका बार-बार यही कहना था कि आपकी कहानी पर कौन विश्वास करेगा? आधार नम्बर और नाम दोनों ही आपके हैं और फिर भी अगर आप यह कहती हैं कि आपके साथ धोखाधड़ी हुई है तो आप हमारे मुम्बई ऑफिस आ जाइए और कम्प्लेंट दर्ज करा दीजिए, तो मैंने उनको कहा कि श्रीमान् जी मैं तो दिल्ली में हूँ। तो उन्होंने कहा फिर ऑनलाइन वीडियो कॉल से कम्प्लेन्ट दाखिल कीजिए। अब उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि SKYPE को डाउनलोड करके केवल स्काइप पर ही बात करिए। उन महिला का कहना है कि मैं इतनी डर गई कि उनकी बात मानने के अलावा मेरे दिमाग में कोई दूसरी बात ही नहीं थी। उनके निर्देशानुसार मैंने सब कुछ किया। खिड़कियों के परदे तक उन्होंने डलवा दिए। यहाँ तक कि प्रत्येक १० सेकेण्ड में मुझे कहना पड़ा कि श्रीमान् मैं यहाँ हूँ। कुछ घण्टों के बाद जब उन्होंने कहा कि वे दोबारा कॉल करते हैं तब उस मध्य में मैंने अपने सहकर्मी को सब बताया। उन्होंने कहा यह सब फ्राड है। मुझे आश्वस्त किया। तब जाकर मैंने पुलिस में शिकायत दर्ज करायी।

यह आँखें खोल देने वाली घटना है कि ये ठग शिकार को इस प्रकार अपने नियंत्रण में ले लेते हैं कि वह कुछ सोच समझ पाए उससे पूर्व अपराध घटित हो जाता है।

ऐसे कुछ विवरण और देखते हैं-

अप्रैल २०२४ में, दिल्ली में एक वकील को अपराधियों ने अपने जाल में फंसाया। सीमा शुल्क अधिकारियों और साइबर अपराध अधिकारियों के रूप में अपने को प्रस्तुत करते हुए उन्होंने उसे नकली 'नारकोटिक्स टेस्ट' के लिए स्ट्रिपिंग करने के लिए मजबूर किया। उन्होंने उसे यह विश्वास दिलाकर १४ लाख रुपये वसूले कि उसे ड्रग तस्करी के मामले में फंसाया गया है।

जुलाई २०२४ की बात है, नोएडा स्थित एक डॉक्टर पर भारतीय दूरसंचार नियामक प्राधिकरण (TRAI) के अधिकारियों के रूप में अपने को प्रस्तुत करते हुए धोखेबाजों ने आरोप लगाया कि उनके मोबाइल नम्बर का

इस्तेमाल अवैध गतिविधियों के लिए किया जा रहा था और उनका नाम मनी-लॉन्ड्रिंग जाँच में सामने आया है। डॉक्टर साहब इतने घबरा गए कि किसी भी चीज को सत्यापित करने के बजाय ठगों के हाथों ६० लाख रुपये खो दिए।

मध्य प्रदेश के इन्दौर में जालसाजों के एक गिरोह ने ६५ वर्षीय एक महिला से पाँच दिनों तक फर्जी पूछताछ करने के बाद कथित तौर पर ४६ लाख रुपये ठग लिए। हुआ क्या? जालसाज गिरोह के एक सदस्य ने महिला को फोन किया और खुद को केन्द्रीय जाँच ब्यूरो (सीबीआई) का अधिकारी बताया। और कहा तस्करी, आतंकवाद और धन शोधन के मामले में उनका सम्मिलित होना पाया गया है। अगर वे अपराधी नहीं हैं तो उनके बैंक खाते का दुरुपयोग किसी ने किया है, और यह भी कि उसके खिलाफ गिरफ्तारी वारण्ट जारी किया गया है।

पूछताछ में महिला को धमकी दी गई कि अगर उसने अपने बैंक खाते में जमा धन को गिरोह द्वारा बताए गए खातों में स्थानान्तरित नहीं किया, तो उसकी और उसके बच्चों की जान खतरे में पड़ सकती है। धमकी से डरकर महिला ने गिरोह द्वारा बताए गए अलग-अलग बैंक खातों में दो किस्तों में कुल ४६ लाख रुपये ट्रांसफर किए। अभिरामपुरम में ७२ वर्षीय एक महिला से ४.७२ करोड़ रुपये ठगने के डिजिटल मामले में चेन्नई पुलिस ने १३ लोगों को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने मनी ट्रेल का पीछा किया और विल्लीवक्कम और ट्रिप्लिकेन के एक गिरोह का पता लगाया। पुलिस ने गिरोह के पास से ५३ लाख रुपये, मोबाइल फोन, पासबुक और चेक बुक बरामद की है। जाँच के बाद सभी १३ आरोपियों को न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया।

उक्त महिला ने बताया कि उनसे मुम्बई पुलिस का एक अधिकारी होने का दावा करने वाले एक व्यक्ति ने फोन पर सम्पर्क किया था, जिसने कहा कि सीमा शुल्क विभाग द्वारा अवैध ड्रग्स, नकली पासपोर्ट, २५७ एटीएम कार्ड और बाघ की खाल वाले पार्सल को जब्त किया गया था। जिसमें वे भी सह अभियुक्त हैं।

जब महिला ने 'अधिकारी से उसे मामले से मुक्त करने के लिए कहा, तो व्यक्ति ने उसे आश्वस्त किया कि अगर उसने वीडियो कॉल के माध्यम से जाँच में सहयोग किया, तो वे उसे रिहा कर देंगे और उसे घर पर खुद को अलग करने के लिए कहा।' इस सब झमेले से बचने के लिए उस निर्दोष महिला ने ४.७२ करोड़ रुपये ट्रांसफर किए। जब उसे पता चला कि उसके साथ घोटाला हुआ है, तो उसने पुलिस में शिकायत दर्ज कराई।

इस प्रकार की सैंकड़ों घटनाओं में से हमने यहाँ कुछ इसलिए प्रस्तुत की हैं कि ये साइबर अपराधी इस प्रकार यह सब करते हैं कि अत्यन्त पढ़े-लिखे और जागरूक लोग भी इनके शिकार बन जाते हैं। परन्तु अगर हम अपेक्षित सावधानी रखें तो ऐसे अपराधों की चपेट में आने से बचा जा सकता है। क्या सावधानी रखें-

1. ध्यान रखें कि कोई भी एजेन्सी वीडियो कॉल पर ही सारा काम नहीं करती और गिरफ्तारी तो बिलकुल नहीं।
2. अगर आपको अपने सम्बन्धी के मुश्किल में होने की बात कही जा रही है तो उस सम्बन्धी से बात कर सत्यता जानने का प्रयत्न करें। जैसा आगरा वाली घटना में भाई ने बहिन से बात कर माँ को बता दिया कि बहिन सुरक्षित है। तब तो माँ को समझ जाना चाहिए था।
3. फोन करने वाले की पहचान सत्यापित करें; अनजान फोन कॉल या सन्देश न लें। आप ट्रू कॉलर जैसे एप

की सहायता ले सकते हैं।

4. सबसे बड़ी बात यह है कि उधर से कुछ भी कहा जा रहा हो आप घबराएँ नहीं : स्कैमर्स डराने के मनोविज्ञान पर कार्य करते हैं। वे आपके दिमाग से खेलते हैं और आपको सम्हलने का समय नहीं देना चाहते। अतः आप शान्त रहें और दावों की जाँच के लिए समय निकालें।
5. व्यक्तिगत जानकारी साझा करने से बचें : कभी भी फोन पर संवेदनशील व्यक्तिगत या वित्तीय जानकारी का खुलासा न करें, खासकर अवांछित कॉल करने वालों को।
6. भुगतान अनुरोध : यदि कोई किसी एजेन्सी से सम्बन्धित व्यक्ति होने का दावा करता है और वायर ट्रांसफर, क्रिप्टोकरेंसी या उपहार कार्ड के माध्यम से भुगतान की माँग करता है, तो फ्रॉड होने के स्पष्ट संकेत हैं।
7. संदिग्ध घोटालों की रिपोर्ट करें : आगे के शोषण को रोकने के लिए साइबर अपराध अधिकारियों को तुरन्त संदिग्ध डिजिटल गिरफ्तारी घोटालों की रिपोर्ट करें।
8. प्रधानमंत्री की सीख को हृदयंगम कर लें- रूको, सोचो और उपयुक्त कार्यवाही करो।

- अशोक आर्य
सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, उदयपुर
चलभाष- ०९३१४२३५१०१, ०८००५८०८४८५

विश्व भर से आने वाले पर्यटकों के नवलखा महल, उदयपुर के बारे में विचार

आज हम पाँच साथी सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान श्री प्रकाश जी आर्य के साथ उदयपुर पहुँचे।
यहाँ नवलखा महल मे स्वामी दयानन्द जी का वो स्थान देखा जहाँ उन्होंने सत्यार्थप्रकाश सम्पूर्ण किया था। महल में आर्य समाज और वैदिक ज्ञान की पुस्तकों, पंचमहायज्ञ व संस्कारों के चित्र सहित प्रदर्शनी देखी। स्वामी जी के बचपन व उनके द्वारा किए गये कार्यों, उनके विचारों से प्रभावित क्रान्तिकारियों के चित्र वर्णन आदि देखे-सुने।
प्रेरणा कक्ष में देश के विद्वानों के चित्रों के दर्शन किये। चित्रों को वर्णित करने में इस महल के गाइड श्री सिद्धम आर्य व श्री लोकेश तथा रिसेप्शन को सुशोभित करने वाली सुश्री करिश्मा का सहयोग सराहनीय रहा।

- आर्य रामलाल प्रजापति; महू

बहुत सुन्दर एवं सुव्यवस्थित चित्रण है। स्थापत्य एवं चित्रकला के माध्यम से सुन्दर जानकारियों को समाहित किया गया है। परन्तु डिजिटलों जो शॉर्टफिल्म श्री राणा प्रताप जी पर दिखाई गई है सुझाव हैं कि मूल जानकारियों को भी समाहित किया जाये। राजस्थान वीरों की धरती है, अगली पीढ़ियों में सटीक जानकारियाँ पहुँचाना हमारी नैतिक जिम्मेवारी है। इसमें सतर्कता बरतनी चाहिए। आपका लक्ष्य सफल हो ऐसी मेरी शुभकामना है।

- अनुपमा श्रीवास्तव; प्रचार्या सी.सै.स्कूल, उदयपुर

nku dh vihy

सत्यार्थ प्रकाश रचना स्थली नवलखा महल से NMCC के रूप में सत्यार्थ शिक्षाओं को जिस अद्भुत प्रकार से प्रसारित किया जा रहा है और सहस्रों लोग आकर्षित हो इसका लाभ ले रहे हैं जिस कारण से यह स्थल अब विख्यात होता जा रहा है। आपसे प्रार्थना है कि इस यज्ञ में अपनी छोटी–बड़ी आहुति अवश्य देने की कृपा करें। इस हेतु साथ में दिए यूपीआई कोड का भी आप इस्तेमाल कर सकते हैं। बस एक अनुरोध है कि अगर आप अर्थ सहयोग प्रदान करें तो चलभाष 9314235101, 7976271159 अथवा 9314535379 पर सूचित अवश्य करें।

G Pay
BHIM UPI

आजीवन सत्यार्थ मित्र

सत्यार्थमित्र योजना में प्रतिवर्ष 5100 रुपए देने के क्रम में कुछ बन्धु प्रतिवर्ष रिन्यूअल कराने के झंझट से विरत रहना चाहते हैं, अतः न्यास ने अपनी पिछली बैठक में यह निश्चय किया है कि आजीवन सत्यार्थमित्र के रूप में जो भाई बहिन रु.51000 एकमुश्त जमा करा दें तो उनका यह सहयोग आजीवन सत्यार्थमित्र के रूप में मान्य होगा। समर्थ आर्यजन इस दिशा में सकारात्मक सहयोग करने का श्रम करें।

यदि हम ध्यानपूर्वक देखें तो पता चलता है कि आज आधुनिक कहा जाने वाला समाज पहले से भी अधिक अंधविश्वासी हो गया है। जिधर देखो ज्योतिषियों अथवा भविष्यवक्ताओं की दुकानें सजी हैं। बहुत कम ऐसे समाचार पत्र हैं जिनमें दैनिक, साप्ताहिक अथवा मासिक भाग्यफल प्रकाशित न होता हो। दैवी कृपा बेचने और खरीदने के कारोबार ने न केवल अशिक्षित लोगों को अपने जाल में बुरी तरह से जकड़ रखा है अपितु शिक्षित समाज भी इससे मुक्त नहीं रह गया है। इनके कारण हमारा वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित ही नहीं हो पाता। गीता में निष्काम कर्म को महत्त्व दिया गया है। कर्म करो लेकिन फल की इच्छा मत करो। निष्काम कर्म का अर्थ ही है कि कार्य में सफलता आशातीत व असंदिग्ध होती है। लेकिन अधिकांश लोग कार्य में सफलता सुनिश्चित करने के लिए ये भी सुनिश्चित करने का प्रयास करते हैं कि कार्य को सही अथवा शुभ मुहूर्त में ही किया जाए क्योंकि उनके अनुसार शुभ मुहूर्त में किए गए कार्यों में ही अपेक्षित पूर्ण सफलता सम्भव है, अन्यथा नहीं। यह विचार पूर्णतः भ्रामक है।

यात्रा पर जाना हो, प्रॉपर्टी खरीदनी हो, मकान बनवाना प्रारम्भ करना हो, गृहप्रवेश करना हो अथवा विवाहादि अन्य कोई भी मांगलिक कार्य हो लोग प्रायः शुभ मुहूर्त में ही ये कार्य सम्पन्न करते हैं। कुछ लोग इतने अधिक अंधविश्वासी हो चुके हैं कि वे चाहते हैं कि उनके बच्चे का जन्म भी तथाकथित शुभ मुहूर्त में ही हो। इसके लिए पहले तो वो ज्योतिषी वगैरा से पैदा होने वाले अपने बच्चे के पैदा होने के संभावित समय के आसपास के शुभ मुहूर्त पूछते हैं। फिर डॉक्टर से कह कर उसी शुभ मुहूर्त में बच्चे की डिलीवरी करवाने का प्रयास करते हैं। क्या नादानी है! नादानी ही नहीं निर्दयता व प्रकृति के विरुद्ध कार्य है और किसी भी क्षेत्र में प्रकृति के विरुद्ध जाने के भयंकर परिणाम निकलते हैं। एक बात और है सोचने की और वो ये कि क्या तथाकथित शुभ मुहूर्त में कार्य अपने आप हो जाते हैं? क्या शुभ मुहूर्त में कार्य करके सफलता पाने के लिए पुरुषार्थ नहीं करना पड़ता? वास्तव में पुरुषार्थी व्यक्ति ही जीवन में अधिकाधिक सफलता प्राप्त करते हैं शुभ मुहूर्त की प्रतीक्षा में बैठे रहने वाले या भाग्यवादी लोग नहीं।

किसी भी कार्य को करने के लिए शुभ मुहूर्त, शुभ घड़ी, शुभ दिन अथवा शुभ महीना कौन सा होगा इसका पूरा शास्त्र हम लोगों ने रच डाला है लेकिन देखने में ये भी आता है कि एक समय विशेष पर शुभ मुहूर्त में जहाँ अनेकानेक मांगलिक कार्य सम्पन्न हो रहे होते हैं वहीं उन्हीं क्षणों में दूसरी ओर रोग-शोक, मृत्यु, दुर्घटनाएँ, उत्पीड़न, शोषण आदि के असंख्य दृश्य भी सर्वत्र दिखलाई पड़ते हैं। किसी का जन्म हो रहा है तो कोई काल के गाल में समा रहा है। कहीं मंगल ध्वनि सुनाई पड़ रही है तो कहीं हृदयविदारक रुदन कानों के पर्दों

से टकरा रहा है। कहीं परीक्षा परिणाम घोषित हो रहा है जिसमें कोई पास तो कोई फेल हो रहा है। ऐसी स्थिति में हम प्रायः कह देते हैं कि ये अपने-अपने कर्मों का फल है। जैसा कर्म वैसा परिणाम। ठीक है। जैसा कर्म वैसा परिणाम लेकिन यदि हर व्यक्ति को अपने कर्मों का फल भोगना ही है, कर्म के अनुसार परिणाम मिलना ही है तो फिर महत्त्व कर्म का हुआ या मुहूर्त का?

शुभ मुहूर्त वास्तव में है क्या? शुभ मुहूर्त वास्तव में कार्य को प्रारम्भ करने का उचित समय है। यह समय प्रबन्धन अथवा आत्म प्रबन्धन का ही एक स्वरूप है ताकि कार्य समय पर संपन्न हो सके और निर्विघ्न रूप से संपन्न हो सके। हमारे संसाधन और प्रयास निरर्थक न हो जाएँ। एक समय था जब हमारे पास उतने साधन नहीं थे जितने आज हैं। पहले सड़कें नहीं थीं, यातायात के साधन नहीं थे। अतः लोग पैदल ही आते-जाते थे। बरसात के दिनों में तो पैदल आना-जाना भी दुष्कर हो जाता था। ऐसे में बरसात के दिनों में किसी भी कार्य को करने का निषेध था ताकि मौसम सम्बन्धी परेशानियों व अव्यवस्था से बचा जा सके। पहले बिजली नहीं थी अतः दिन की रोशनी में ही सारे कार्य करने होते थे। कहीं जाना होता तो सुबह जल्दी उठ कर चल पड़ते थे ताकि पहुँचने और वापस आने में रात न हो जाए। आज भी दोपहर से पूर्व या सूर्यास्त से पहले का समय शुभ माना जाता है और इसके मूल में है सामान्य बुद्धि और व्यावहारिकता।

अब जीवन के दूसरे महत्त्वपूर्ण पक्ष को भी देखिए। आपका किसी महत्त्वपूर्ण या मनचाहे कोर्स में प्रवेश हो जाता है अथवा नौकरी मिल जाती है तो आपको एक निर्दिष्ट समय पर ही जाना पड़ता है अन्यथा आपका प्रवेश या नौकरी रद्द कर दी जाती है। क्या ऐसी स्थितियों में भी आप शुभ मुहूर्त के चक्कर में पड़ेंगे? शायद नहीं। बिलकुल भी नहीं। हम जानते हैं कि यदि ये अवसर हाथ से निकल गया तो दोबारा नहीं मिलने वाला। हम तत्क्षण अपेक्षित दिशा में आगे बढ़ने का निर्णय लेते हैं। प्रायः यही पढ़ाई अथवा नौकरी हमारे जीवन में सुख-समृद्धि लाती है तथा हमारे जीवन को अर्थ व गुणवत्ता प्रदान करने में सहायक व सक्षम होती है। एक वकील व उसके मुवक्किल को एक निर्दिष्ट तिथि अथवा समय पर न्यायालय में उपस्थित होना होता है। क्या इसके लिए किसी मुहूर्त विशेष तक प्रतीक्षा की जा सकती है? क्या किसी शुभ मुहूर्त तक प्रतीक्षा के लिए न्यायालय से याचना की जा सकती है? कदापि नहीं। यहाँ भी अवसर महत्त्वपूर्ण हो जाता है न कि कोई मुहूर्त विशेष।

वास्तव में उपयोगी अवसर की प्राप्ति अथवा महत्त्वपूर्ण कार्य के प्रारम्भ के कारण ही कोई समय विशेष या दिन विशेष हमारे लिए यादगार बन जाता है, शुभ हो जाता है शुभ मुहूर्त के कारण नहीं। यही कारण है कि हम अपना जन्म दिन, किसी महत्त्वपूर्ण पाठ्यक्रम में प्रवेश का दिन, नौकरी शुरू करने का दिन व विवाहादि का दिन कभी नहीं भूलते। उनकी वर्षगाँठ मनाकर उसे हमेशा याद रखने का प्रयास करते हैं। किसी भी वर्षगाँठ या एनिवर्सरी को मनाने के लिए तो कभी भी शुभ मुहूर्त नहीं देखा जाता। जब हम इस संसार में आते हैं तो क्या शुभ मुहूर्त देखकर आते हैं? जब कोई व्यक्ति बीमार होता है या कोई आसन्नप्रसवा प्रसव पीड़ा के कारण छटपटा रही होती है तो क्या शुभ मुहूर्त देखकर ही उन्हें अस्पताल या लेबर रूम में ले जाया जाता है? नहीं न। तो फिर अन्य कार्यों के लिए शुभ मुहूर्त रूपी इस निरर्थक नाटकबाजी की क्या जरूरत है?

यदि हम ध्यानपूर्वक देखें या चिन्तन करें तो ज्ञात होता है कि मुहूर्त शुभ या अशुभ नहीं होता शुभ या अशुभ होते हैं कार्य। जिसका परिणाम शुभ वही कार्य शुभ और जिसका परिणाम भयंकर होने की प्रबल सम्भावना हो वही कार्य अशुभ है। हमारे लिए श्रेयस्कर यही होगा कि हमें पता चल जाए कि कौन से कार्य शुभ हैं और कौन से अशुभ। संस्कृत में एक सूक्ति है कि 'शुभस्य शीघ्रम्, अशुभस्य कालहरणम्' अर्थात् शुभ कार्य को जितना जल्दी हो सके कर डालें लेकिन अशुभ कार्य को निरन्तर टालते रहें। शुभस्य शीघ्रम् अर्थात् शुभ अथवा पुण्य कार्य को शीघ्र करें। यदि हम उस क्षण को चूक गए तो हम किसी नेक काम अथवा पुण्य से वंचित

अवश्य रह जाएँगे। किसी का धन्यवाद करना है तो क्या किसी मुहूर्त अथवा उचित अवसर की प्रतीक्षा करना उचित होगा? कदापि नहीं। किसी को पुरस्कृत करना है अथवा किसी का धन्यवाद करना है तो शीघ्रता करें।

साथ ही कहा गया है कि अशुभस्य कालहरणम् अर्थात् अशुभ अथवा पाप कर्म के लिए शीघ्रता न करें अपितु समय गुजर जाने दें। अशुभ कार्य को करने में कभी भी शीघ्रता मत कीजिए। उन्हें यथा सम्भव टाल दीजिए। सम्भव है कालान्तर में कहीं से ऐसी सद्बुद्धि मिल जाए

कि पाप कर्म से विरत हो जाएँ अथवा गलत काम को करने से बच जाएँ। आज इस विश्व में इतने आणविक, परमाणविक व अन्य अस्त्र-शस्त्र उपलब्ध हैं जिनसे इस खूबसूरत दुनिया को इसके सम्पूर्ण जीव जगत् सहित अनेकानेक बार पूर्णतः नष्ट-ध्वस्त किया जा सकता है लेकिन कुछ अच्छे व समझदार लोगों की अशुभस्य कालहरणम् नीति व दृष्टि के कारण ही हम जीवित है। अशुभ कार्य को यथासम्भव टाल दीजिए। क्या किसी भी शुभ कार्य को करने की तरह ही अशुभ कार्य को न करने का मूहूर्त भी निकाला जाता है? नहीं। सम्भव ही नहीं है। समझदारी और विवेक से काम लेने की जरूरत है। समझदारी और विवेक से कोई भी समय शुभ समय हो जाएगा जबकि इसके अभाव में किसी भी घड़ी को अशुभ होते देर नहीं लगती। यही समझदारी शुभ मुहूर्त है। सही मुहूर्त नहीं सही और उपयोगी कार्य का चुनाव कर उसे पूरा करना अपेक्षित है अन्य कुछ भी नहीं।

कई बार हम किसी अत्यन्त महत्त्वपूर्ण कार्य में लगे होते हैं और किसी भी कीमत पर उसे पूरा किए बिना नहीं छोड़ना चाहते लेकिन इसी दौरान विषम परिस्थितियाँ उत्पन्न होकर हमारे काम को बाधित कर देती हैं। मान लीजिए किसी शुभ मुहूर्त में आप कोई अनुष्ठान या आयोजन करवा रहे हैं और उसे उसी शुभ मुहूर्त में ही पूरा होना चाहिए। ऐसे समय पर यदि दुर्भाग्य से आपका बच्चा सीढ़ियों से गिर जाता है और उसे गम्भीर चोट लग जाती है तो क्या इस स्थिति में आप शुभ मुहूर्त में हो रहे कार्य को पहले पूरा होने देंगे या बच्चे को डॉक्टर के पास या अस्पताल लेकर जाएँगे? यदि हम महत्त्वपूर्ण कार्य की बजाय अर्जेंट कार्य पहले और फौरन नहीं करेंगे तो शुभ मुहूर्त के अशुभ में बदलते देर नहीं लगेगी। यदि बाढ़, भूकम्प अथवा दुर्घटना जैसी कोई प्राकृतिक आपदा आती है तो सरकार ही नहीं लोग भी शुभ मुहूर्त देखने की बजाय फौरन बचाव व राहत कार्यों में जुट जाते हैं।

जब हमारे पास अवसर होते हैं, योजनाएँ होती हैं तभी उनके क्रियान्वयन के लिए उचित समय या शुभ मुहूर्त तलाशते हैं न कि शुभ मुहूर्त में बैठकर अवसर की प्रतीक्षा करते हैं। शुभ मुहूर्त के कारण जीवन में कभी भी महत्त्वपूर्ण कार्य करने के अवसर नहीं मिलते। हमारा विवेक, हमारी सही समय पर सही निर्णय लेने की क्षमता, हमारा सामान्य ज्ञान व हमारी व्यावहारिक बुद्धि आदि ऐसे तत्त्व हैं जो किसी भी क्षण को शुभ अर्थात् उपयोगी बनाने में सक्षम होते हैं। शुभ मुहूर्त की तलाश छोड़ कर शुभ, उपयोगी व सकारात्मक कार्यों के चयन व उपलब्ध उपयोगी अवसरों के क्रियान्वयन में हम जितनी शीघ्रता कर सकें उतना ही हमारे लिए श्रेयस्कर होगा। शुभ मुहूर्त के चक्कर में हम कई बार कोई बड़ा कार्य करने से चूक जाते हैं और बहुत बड़ा नुकसान कर बैठते हैं। समझदारी से हर उपलब्ध क्षण को अधिकाधिक आनन्ददायक, उपयोगी व लाभप्रद बनाया जा सकता है।

- सीताराम गुप्ता
ए.डी. १०६ सी., पीतम पुरा, दिल्ली - ११००३४
चलभाष- ९५५५६२२३२३

सम्मानित जो सकल विश्व में,
महिमा जिनकी बहुत रही है।
अमर ग्रन्थ वे सभी हमारे,
उपनिषदों का देश यही है।
गाएँगे यश हम सब इसका,
यह है स्वर्णिम देश हमारा।
आगे कौन जगत् में हमसे,
यह है भारत देश हमारा।।

ऐसी-ऐसी अमर पंक्तियों के रचयिता जिनकी रचनाओं में भारत के उत्तर-दक्षिण-पूर्व-पश्चिम प्रदेश की महिमा समान रूप से पायी जाती है और सम्पूर्ण भारत की अस्मिता का दिग्दर्शन कराती है वह और कोई नहीं महान् कवि सुब्रमण्यम भारती ही हैं।

सुब्रह्मण्यम भारती का जन्म ११ दिसम्बर, १८८२ को एक तमिल गाँव एट्टियपुरम्, तमिलनाडु में हुआ था। शुरू से ही वह विलक्षण प्रतिभा के धनी थे। प्रतिभा उम्र की मोहताज नहीं होती यह बात कविवर सुब्रमण्यम भारती के जीवन से स्पष्टतः परिलक्षित होती है। मात्र २८ वर्ष जिसको जीने के लिए मिले, उसने एक जुझारू शिक्षक, एक महान् कवि, पत्रकार, सम्पादक और देशभक्त के रूप में अपने को शीर्ष पर स्थापित कर लिया। उनकी कविताओं ने मुर्दा दिलों में भी जान फूंक दी। लोग उनको पढ़कर स्वतंत्रता संग्राम में कूद पड़े।

उनके पिता चिन्नास्वामी अय्यर गणित के धुरन्धर थे और मशीनरी का भी सूक्ष्म ज्ञान रखते थे। विदेशी मशीनों को भी वे सुधार लेते थे। अपने बेटे सुब्बैया को गणित और अँग्रेजी में विद्वान् बना देखना चाहते थे। चाहते थे वह उच्च पद पर आसीन हो। परन्तु सुबैय्या (बचपन का नाम) का क्षेत्र साहित्य था। जब वे सुकुमार अवस्था में थे, तभी उन्होंने एक सुन्दर कविता जमींदार (राजा) को सुनायी। उन्होंने प्रसन्न होकर इन्हें भारती की उपाधि दी। सुब्रमण्यम तमिल से प्रेम करते थे। अंग्रेजी में उनकी रुचि नहीं थी। वे काशी जाकर संस्कृत भाषा भी पढ़े परन्तु उनकी प्रायः रचना तमिल में ही हैं। काशी प्रवास के आखरी पड़ाव में एक विद्यालय में आपने २० रु. मासिक पर शिक्षक के रूप में अपनी सेवाएँ दीं। परन्तु यह नौकरी उन्हें अधिक दिन बाँध कर नहीं रख सकी।

एट्टियपुरम के राजा के दबाब ने, पत्नी के आग्रह ने भारती को गाँव लौटने पर मजबूर कर दिया परन्तु राजा के आग्रह पर भी वे उनके रंग में न रंग सके,

इस कारण राजा ने उन्हें महल से निकाल दिया। उसी समय एट्टियमपुरम् में आग लगने की बहुत-बड़ी

घटना हुई थी। इस पर भारती ने तुकबन्दी की कि 'एक युग में लंकापति ने एक कपि का अपमान किया तो लंका जल गई। एट्टियपुरम् के राजा ने एक कवि का अपमान किया तो एट्टियपुरम् जल कर श्मशान हो गया।' भारती उनकी उपाधि थी जो उन्हें सामन्ती शासन द्वारा प्रदान की गयी थी। वन्दे मातरम उनका सर्वप्रिय गान था। उन्होंने उसी धुन में वन्देमातरम का तमिल में अनुवाद किया।

भारती जी ने जीवन निर्वाह के लिए अत्यल्प वेतन पर 'स्वदेश मित्रन्' नामक पत्रिका में कार्य किया। स्वदेश भक्ति उनमें कूट-कूट कर भरी थी, इसलिए उनकी मित्रता सुरेन्द्र नाथ आर्य से हुयी जो अंग्रेजों की जेल में ६ वर्ष की सजा काट कर आये थे।

सन् १९०५ में वाईसरॉय रहे लॉर्ड कर्जन ने बंगाल

का बँटवारा पूर्वी और पश्चिमी के रूप में किया। बंगालवासियों को यह बँटवारा तनिक भी मंजूर नहीं था। बंगाल बँटवारे से जो बंगभंग आन्दोलन प्रारम्भ हुआ उसका अन्तिम निष्कर्ष स्वराज्य की अवधारणा थी। इन हालातों ने भारतीजी के हृदय में दबी देशभक्ति की भावना को झिंझोड़कर रख दिया। उन्होंने अपने कुछ दोस्तों की सहायता से तमिल में 'इण्डिया' नाम की पत्रिका का प्रकाशन प्रारम्भ किया। लाल रंग को खतरे का निशान माना जाता है और भारतीजी ने पत्रिका के पन्ने लाल रखे। लोग बड़ी उत्सुकता से इस साप्ताहिक के आने की बाट जोहते। भारती जी समस्त भारत की एकता में दृढ़ विश्वास रखते थे। वे दक्षिण उत्तर का कोई भेद नहीं मानते थे। 'भारती जी का मानना था यह देश तीस करोड़ लोगों का ऐसा समूह या संघ है जिसमें सभी चीजें साझा है। एक ऐसा आदर्श समाज है जो विश्व में अनन्य है।'

अँग्रेजों व उनकी नीति के खिलाफ भारती जी 'इण्डिया' पत्रिका में हर सप्ताह आग उगल रहे थे। उन्होंने, जब कोई तैयार नहीं था तब विपिन चन्द्र पाल को आमन्त्रित किया, विदेशी कपड़ों के बहिष्कार की शुरुआत चैन्नई के तिरूवलीकेनी के समुद्र तट पर विपिन चन्द्र पाल की सभा में ही हुई थी। जो बाद में देशव्यापी रूप में फैली और बड़ी होली के रूप में जलाई गई।

इसी समय तमिलनाडु के तुतूकूड़ी में भी अँग्रेजों के खिलाफ जुलूस निकाला गया जिसमें कई गिरफ्तारियाँ हुईं और राजद्रोह की सजा सुनाई गई। इन लोगों ने भारतीजी के लिखे देशभक्ति के ओजपूर्ण गानों को सामूहिक रूप से गाते हुए घोष किया था। अंग्रेज जज का कहना था कि 'भारती' के गीत तो लाश में भी जान डाल देते हैं। ऐसे में जनता तो आसानी से भड़क कर सरकार के खिलाफ गदर मचा सकती है या बलवा कर सकती है।

प्रस्तुति- श्रीमती दुर्गा गोरमात
नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर

तीसरा उपाय-ब्रह्मचर्य (संयम)

भारतीय शास्त्रों में ब्रह्मचर्य अनेक अर्थों में आता है। इस प्रकरण में इसका तात्पर्य वीर्यरक्षा, संयम से है। हम जो भोजन खाते हैं, उससे क्रमशः रस, रक्त आदि सात धातुएँ बनती हैं और अन्तिम का नाम वीर्य है। जो कि शक्ति, तेज, स्वास्थ्य, उत्साह और रोग निवारण का आधार होता है। अतः इस शारीरिक सम्पत्ति की देखभाल करना सर्वथा उपयुक्त रहता है। जैसे कि बैंक में सुरक्षित धन, सम्पत्ति की सम्भाल के साथ इसके विकास के लिए पौष्टिक पदार्थ अवश्य लेने चाहियें, क्योंकि भुक्त पदार्थों से ही सातों धातुएँ बनती हैं।

संसार में ऐसा व्यक्ति मिलना कठिन है, जिसको कभी स्वप्नदोष न हो, पर अधिक होना रोग है। जैसे एक पात्र में भरा दूध-ठोकर, उफान से बाहर आता है, ऐसे ही विषय-वासना का अधिक चिन्तन-व्यवहार, अधिक गर्म-खट्टे-चटपटे पदार्थ मन को असंयम के पथ पर ले जाते हैं। अतः कामवासना की दिशा से मन आदि को भटकाना अब्रह्मचर्य है।

आरोग्यता का चौथा साधन-निद्रा

अन्य साधनों की तरह निद्रा भी स्वास्थ्य के लिए अत्यन्त उपयोगी है। जाग्रत अवस्था में शरीर के कार्यरत रहने से स्नायुतन्तुओं में थकान आ जाता है, वे टूट जाते हैं। इस थकान को दूर कर नींद नवीन उत्साह, शक्ति देती है और टूटे हुए तन्तुओं को वह जोड़ती है। कई बार भोजन के बिना हम इतनी कमजोरी अनुभव नहीं करते, जितनी कि एक दो रात न सोने से प्रतीत होती है। निद्रा से व्यक्ति तरोताजा हो जाता है।

अच्छी नींद के लिए तीन बातें आवश्यक हैं। पहली बात है- 'निश्चिन्तता' चिन्ता से नींद भाग जाती है। मन की पवित्रता-चिन्ता रहित और प्रसन्न बनाती है, इससे गहरी नींद आती है जैसे कि बच्चों को। दूसरी बात- थकावट की है। जो शरीर से श्रम नहीं करते, उनको भी कम नींद आती है और श्रम के बाद ही विश्राम सार्थक होता है। तीसरी बात है- भोजन, क्योंकि भूखे पेट भी गहरी नींद नहीं आती। हाँ, अधिक मात्रा में अनाप-शनाप खा लेने पर भी निद्रा में व्यतिक्रम आ जाता है। समय पर पूरी नींद लेने से शारीरिक पुष्टि, रूप में निखार, बल, उत्साह, पाचन अग्नि में वृद्धि और चुस्ती आती है। इससे यही सिद्ध होता है, कि 'सोना' तो सोना ही है।

आर्थिक प्रगति

'दूजा सुख जिसके पल्ले माया'

भौतिक शरीर के संवर्धन और संरक्षण के लिए भौतिक पदार्थों (भोजन-वस्त्र-मकान, शिक्षा-चिकित्सा सुविधाओं) की आवश्यकता होती है। भौतिक पदार्थों की प्राप्ति का मानदण्ड, आधार आज धन ही है। धन हमारी भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति का साधन होने से

ही 'अर्थ' कहलाता है। चल-अचल सम्पत्ति के रूप में अर्थ के दो भेद हैं। अतः जीवन व्यवहार और सफलता का साधन होने से अर्थ का पुरुषार्थ चतुष्टय में सदा से प्रतिष्ठित स्थान रहा है।

धन के बिना निर्धन की स्थिति 'ढिड्डे न पइयां रोटियां-ते सब्भे गल्लां खोटियां' जैसे ही होती है। उसकी इच्छायें सूखी नदी की तरह उभर-उभर कर सूख जाती हैं। उसकी सर्वत्र स्थिति अपराधी और अपमानित जैसी ही होती है। अतएव कई बार व्यक्ति भूख, निर्धनता से बेचैन होकर ईमान, सच्चाई, दया को ताक कर रखकर चोरी, डाके आदि में लग जाता है। प्रायः खाली हाथ वाले विवश होकर क्रूर से क्रूर या घृणित कार्य करने से भी नहीं हिचकते। एक तरफ आज जहाँ निर्धनता के कारण मजबूरी भरे दृश्य सामने आ रहे हैं, वहाँ दूसरी ओर 'धन की भूख' का भूत ही भ्रष्टाचार और घिनौने ढंगों से धन कमाने का बाजार गर्म कर रहा है। अतः धनार्जन के सम्बन्ध में एक स्वस्थ दृष्टिकोण अपनाने की आवश्यकता है। यतो हि इसमें कोई शक नहीं है, कि धन बहुत कुछ जरूर है, पर यह ध्यान रहे- धन सब कुछ नहीं है। निःसन्देह गरीबी एक अभिशाप है, क्योंकि गरीब न अपनी और न ही अपनों की मौलिक आवश्यकतायें पूरी कर सकता है तथा समाज में किसी रूप में भी उसकी इज्जत नहीं होती, वह सर्वत्र अयोग्य, अकर्मण्य समझा जाता है और दूसरी ओर धन वालों के 'कमले भी सयाने' सिद्ध होते हैं। वस्तुतः गरीब के साथ जो बीतती है, यह वह ही जानता है। अतः यह सोचना आवश्यक हो जाता है, कि-

कोई गरीब क्यों?

जीवन-उपयोगी भौतिक पदार्थों को लेने में असमर्थ को गरीब कहते हैं अर्थात् जिसके पास एतदर्थ धन, सम्पत्ति न हो, जिसके द्वारा वह अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए अपेक्षित अन्न, वस्त्र, भवन, चिकित्सा, शिक्षा आदि प्राप्त कर सके। इसी को दूसरे शब्दों में क्रयशक्ति का अभाव भी कहा जा सकता है। जीवनोपयोगी भोग्य पदार्थों को न ले सकने का असामर्थ्य अधिक है या थोड़ी मात्रा में जहाँ हो सकता है, वहाँ रोगी, अपाहिज अकर्मण्य होने के कारण तत्कालिक या बिल्कुल नहीं भी होता है क्योंकि ऐसे व्यक्ति रोगी, अपाहिज होने से तात्कालिक रूप से कमा सकने में जहाँ असमर्थ होते हैं, वहाँ कुछ व्यक्ति स्वस्थ होते हुए भी अकर्मण्य होने के कारण कुछ भी करने के लिए तैयार नहीं होते।

हाँ, कुछ ऐसे भी व्यक्ति हो सकते हैं, जो चाहते हुए भी कार्य के अभाव में कुछ भी कमा नहीं सकते। जिनको बेकार शब्द से अभिहित किया जाता है। अकर्मण्यता जहाँ अपनी रुचि पर निर्भर है, वहाँ विशेष अपाहिज को छोड़कर रोगी और बेकार की स्थिति अस्थायी है। अतः रोगी का इलाज और बेकार के लिए आजीविका का प्रबन्ध होना चाहिए।

गरीबी की श्रेणी में दूसरे वे लोग भी आते हैं, जो कमाते तो हैं, पर थोड़ा ही कमा पाते हैं, क्योंकि वे जो भी कार्य करते हैं वह बहुत थोड़ा होता है या उनको कार्य नियमित रूप से प्राप्त नहीं होता। जिन दिनों उनको कार्य प्राप्त होता है, उन दिनों उनकी आय पर्याप्त होती है। अतः ऐसे व्यक्ति के लिए कार्य के विकल्प का विचार और प्रबन्ध होना चाहिए।

कुछ इसलिए थोड़ा कमाते हैं, क्योंकि वे जो कार्य करते हैं, उसकी समाज में बहुत कम कीमत आँकी जाती है। अनेक कार्य समाज के उपयोगी होते हुए भी हल्के समझे जाते हैं। जैसे कि एक सैनिक या सफाई वाले का कार्य। अतएव वेतनमानों में आज बहुत अन्तर है और वह बहुत अधिक श्रेणियों में विभक्त है। कुछ इसलिए कम कमाते हैं, क्योंकि वे अपने कार्य में दक्ष नहीं होते, ऐसों को जहाँ दक्ष बनाया जाए, वहाँ जिनको योग्य होने पर भी रिश्वत, सिफारिश, पहुँच आदि के अभाव में अयोग्य स्थानों पर नियुक्त कर दिया गया है। उसका तो यही इलाज है, कि उनको योग्य स्थान पर नियुक्त किया जाए।

गरीबी की श्रेणी में तीसरे प्रकार के वे लोग आते हैं, जो कमाते तो पर्याप्त हैं, परन्तु कमाई अपने या दूसरों द्वारा शोषित अथवा लूट ली जाती है। तब 'आगे दौड़ पीछे चौड़' वाली बात हो जाती है। इसका कारण कहीं अज्ञान, लापरवाही, असंयम, विलासिता, व्यसन होता है, तो कही फजूलखर्ची, दिखावे की भावना होती है। अतः आय के साथ व्यय को सूझ-बूझ से करना भी जरूरी है।

निःसन्देह आज हमारे देश में गरीबी का ताण्डव नृत्य हो रहा है। पुनरपि स्पष्ट नुकसान देने वाले शराब, धूम्रपान जैसे नशीले पदार्थ, मांस, जुए, लॉटरी का खूब प्रसार हो रहा है। गरीबी का एक कारण फैशन, दिखावे की भावना भी है। अपनी स्थिति का ध्यान रखे बिना अपने आपको अमीर दिखाने के लिए अनेक रूपों में खुला खर्च किया जाता है। ऐसे ही कुछ की गरीबी का कारण धार्मिक, सामाजिक प्रथा का प्रभाव है। जैसे कि मृतक के नाम पर होने वाले ब्राह्मभोज, श्राद्ध आदि और यज्ञोपवीत, विवाह आदि के आधुनिक रीति-रिवाज भी हैं।

क्या अमीरी-गरीबी भाग्य से मिलती है?

अनेक अमीरी-गरीबी को भाग्य से समझते हैं और कहते हैं कि जिसके भाग्य में गरीबी बदी है, वह हर प्रकार का प्रयास करने पर भी अमीर नहीं हो सकता। प्रतिदिन के अनुभव के आधार पर जब हम इस पर विचार करते हैं, कि पुरुषार्थ और भाग्य की स्थिति खेत की तैयारी और बीज की तरह है। अतः दोनों का समन्वय आवश्यक है। धनी देशों और व्यक्तियों का इतिहास भी इसका साक्षी है, कि अमीरों के मुख्य रूप से निम्न कारण हैं। जैसे कि-

1. व्यक्ति-योग्यता।
2. परिस्थिति।
3. सुविधा की अनुकूलता।
4. धन का व्यवस्थित और उपयोग, व्यय।

तभी तो कहा है-

पसीने से नसीब बदलो,
मेहनत का सिक्का चलता है।

अर्थार्जन और ईमानदारी-

जीवन निर्वाह का साधन, सुख-सुविधाओं का आधार और आज के युग में सम्मान का एक बड़ा कारण होने से अर्थ का महत्व स्पष्ट है। प्रकृति से प्राप्त विविध प्रकार के पदार्थ, तत्व, श्रम, ज्ञान और कला की साधना से ही व्यवहार के योग्य होते हैं। श्रम, ज्ञान और कला से इन तत्वों का उपयोग सैकड़ों गुणा बढ़ जाता है।

हर व्यक्ति का योगदान अलग-अलग प्रकार का होता है। अतः उसका पारिश्रमिक किस प्रकार से आंका जाए? कुछ आवश्यकता के अनुसार इसका निर्णय करना चाहते हैं (-साम्यवादी), कुछ श्रम के अनुरूप विभाजन का विचार रखते हैं (-समाजवादी) पर वह तो सर्वथा स्पष्ट है कि कार्य की सिद्धि में अनेकों का योगदान होता है। अतः सिद्धि से प्राप्त फल में भी सभी का भाग है। हाँ, प्रत्येक को अपना कार्य ईमानदारी से करना चाहिए।

विद्यार्थी का विद्या अध्ययन और गृहिणी का गृहकार्य ही उनका अर्थार्जन है। आज का पढ़ा हुआ ही कल के अर्थार्जन का कारण बनता है। गृहिणी का गृहकार्य उसकी एक महत्वपूर्ण आजीविका है। यह सत्य है कि आज की बदलती परिस्थितियों में नारी को आर्थिक स्वतन्त्रता मिलनी चाहिए। इसके साथ घर की व्यवस्था, सदस्यों का भोजन, वस्त्र, आवास,

सुख-सुविधाओं का प्रबन्ध भी कम महत्वपूर्ण नहीं है। वस्तुतः इन्हीं की पूर्ति के लिए धन कमाया जाता है। घरेलू कार्य करने पर ही होता है, इसके लिए किसी न किसी को श्रम करना ही होगा। जितनी सद्भावना, सहानुभूति, स्नेह से एक नारी गृह-व्यवस्था करती है, उसका बहुत कम अंश अन्य से प्राप्त हो सकता है। इन सारी व्यवस्थाओं पर होने वाले व्यय, परिश्रम की बाजार मूल्य पर कीमत आंकी जाए, तो वह आर्थिक क्षेत्र में माने जाने वाली कमाई से कम नहीं बैठती। अतः गृहकार्य को विशेष सम्मान देने की आवश्यकता है। हाँ, प्रत्येक व्यक्ति को (जिस भी स्थिति में जो है, उसी स्थिति में) अपने कार्य को ईमानदारी से करना चाहिए। ईमानदारी की कोई परिभाषा बान्धना कठिन है। पर हर एक अपने कार्य के सम्बन्ध में अच्छी प्रकार से जानता है, कि ईमानदारी से यह कार्य कैसे होता है और मैं उसमें कहाँ-कहाँ, क्या-क्या बेईमानी करता हूँ या बर्तता हूँ। बेईमानी, हेरा-फेरी से मन को केवल थोड़ी देर के लिए सन्तोष सा प्रतीत होता है, पर लाभ कुछ भी नहीं होता। क्योंकि आज मैं किसी की जेब काट रहा हूँ, तो कोई कहीं मेरी जेब पर हाथ फेर रहा है। इस प्रकार अन्त में घाटा ही हाथ लगता है। वस्तुतः आज की सबसे बड़ी समस्या यही है-

तालीम का शोर इतना, तहजीब का जोर इतना।
बरकत जो नहीं होती, नीयत की खराबी है।।

यह एक सच्चाई है, कि प्रत्येक अपने साथ प्रत्येक स्थिति में ईमानदारी का व्यवहार चाहता है। बेईमानी वश कार्य के बिगड़ने पर हर एक दुःखी हो जाता है। अतः सुखी जीवन के लिए यह आवश्यक है, कि प्रत्येक एक दूसरे के साथ ईमानदारी का व्यवहार करे। अन्यथा किसी के दान-पुण्य, पूजा-पाठ का क्या मतलब या किसी को क्या लाभ? ईमानदारी से ही जब हमारे सारे कार्य होते हैं, तभी सारा समाज सुखी होता है। इसीलिए सभी महापुरुषों ने ईमानदारी=सत्य पर इतना जोर दिया है।

आधुनिक दहेज प्रथा-

भारतीय समाज की दहेजप्रथा बेईमानी का एक निकृष्टतम नमूना है और यह दहेज प्रथा आज लाखों परिवारों के दुःखों और विनाश का कारण बनी हुई है। इस महंगाई और अभाव में लोगों के प्रतिदिन के खर्चे तो पूरे होते नहीं, वे फिर लड़की को पालने-पोसने तथा पढ़ाने-लिखाने के बाद बड़ी-बड़ी बारातों की आवभगत, सजावट एवं विविध नखरे, माँगे कहाँ से पूरी करें। इस पर आए दिन लेन-देन की बढ़ती हुई प्रथायें-कि अब रोका है, अब ठाका है, आज सगाई है, तो एक दिन चुन्नी चढ़ाने के लिए ढ़ेर सारी पलटन आई हुई है। चाहिए तो यह कि लड़के वाला लड़की वाले के अहसान को स्वीकार करे, क्योंकि वह पाल-पोस कर अपने परिवार के एक योग्य सदस्य को दूसरे के परिवार की समृद्धि के लिए सर्वात्मना समर्पित करता है। विवाह वैयक्तिक और सामाजिक जीवन का एक अनिवार्य अंग है। व्यक्ति का एकांगीपन, अधूरापन विवाह द्वारा ही दूर होता है और दोनों के जीवन में आशा, उत्साह का संचार होता है। विवाह दो परिवारों और जीवनों का सम्मिलन है। अतः विवाह पर होने वाले व्यय को दोनों पक्षों को वहन करना चाहिए। एक पर अधिक भार डालना अनुचित है। वस्तुतः लड़की तथा लड़की वालों को हलका समझने से ही आज की अनेक प्रथायें प्रचलित हो रही हैं दहेज प्रथा और कन्या भ्रूणहत्या भी इसी के ही परिणाम हैं। विवाह की सफलता वस्तुतः दोनों परिवारों और जीवनों के हर प्रकार के सहयोग, सद्भाव, सहानुभूति, परस्पर एक-दूसरे को समझने पर ही निर्भर है।

आत्मिक उन्नति

आत्मसत्ता

हम प्रतिदिन अपने व्यवहार की सिद्धि के लिए शरीर, इन्द्रियों, मन और आत्मा का उपयोग करते हैं। शरीर विशेष रूप से ज्ञान तथा कर्मेन्द्रियों का समुच्चय है। हमारे देखने, सुनने, सूँघने, चखने, बोलने आदि बाह्य व्यवहार आँख, कान, नाक, जिह्वा आदि इन्द्रियों से ही होते हैं। जिस प्रकार हमारे देखने आदि के बाह्य व्यवहार किसी न किसी इन्द्रिय से होते हैं। ऐसे ही हमारे सोचने, याद करने आदि के अन्दर के व्यवहार

मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार से होते हैं। इनको अन्तःकरण कहते हैं अर्थात् अन्दर की इन्द्रियाँ, अन्दर का कार्य करने के साधन। शरीर, इन्द्रिय और मनादि जिसकी चेतना से कार्य करते हैं, 'वही आत्मा है' (जैसे कि बल्व, पंखे, मशीनें बिजली से चलती हैं), वह ही शरीर, मन का अधिष्ठाता, नेता और संचालक है। आत्मा अजर-अमर और चेतन है। शरीर, इन्द्रिय, मन और आत्मा इन सबका मेल ही हमारा अपना आपा है। जब तक यह मेल बना रहता है, तभी तक जीवन है।

मैं कौन हूँ

हम प्रतिदिन के अपने व्यवहार को सामने रखकर जब विचार करते हैं, तो इस परिणाम पर पहुँचते हैं, कि हम नित्यप्रति के जीवन में जो कुछ क्रिया-कलाप करते हैं उसमें कुछ वस्तुओं को प्रयुक्त करते, भोग में लाते हैं। अतः मेरा, आपका अपने आप में कुछ भी स्वरूप क्यों न हो, पर आज जिस रूप में हम जीवन व्यतीत कर रहे हैं, वह भोक्ता, कर्त्ता, द्रष्टा का ही है। आज की स्थिति में यही हमारा स्वरूप और परिचय है। यह तभी सिद्ध होता है, या उस-उस व्यवहार को करने में हम तभी समर्थ होते हैं जब इन्द्रिय-मन और आत्मा का मेल मिलता है, अन्यथा नहीं। यह सर्वविदित बात है कि शरीर, इन्द्रिय और मन का अधिष्ठाता, नेता, संचालक रूप एक चेतन आत्मा है। जो कि नित्य और सबका अलग-अलग है। शरीर तथा मन केवल साधन हैं। जो आत्मा रूपी सवार को अपनी जीवन यात्रा पूर्ण करने के लिए अपने कर्मों के अनुसार मिलते हैं। आत्मा की चेतना से प्रेरित हुआ मन उस-उस इन्द्रिय द्वारा रूप, रस, शब्द आदि का भोग करता है। आज जिस स्थिति में हम हैं, वह शरीर, मन और आत्मा का मेल ही है। अकेला आत्मा किसी भोग्य पदार्थ का भोग=बर्ताव नहीं कर सकता, और तो क्या वह अपने आप का भी अनुभव नहीं कर सकता।

हमारे जीवन व्यवहार में जहाँ शरीर का योगदान स्पष्ट दिखाई देता है, वहाँ अनेक व्यवहारों में मन का प्रभाव तथा अंशदान स्पष्ट रूप से होता है। तभी तो विचारों और भावनाओं का व्यक्ति पर प्रभाव होता है।

क्रमशः .....

लेखक- आचार्य भद्रसेन
दर्शनाचार्य, होशियारपुर

Lokeh dk cfynku

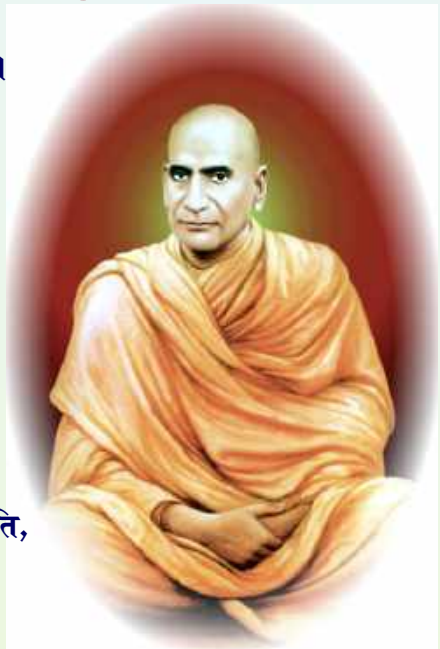

त्यागमयी वह विभूति महान्,
जिनसे रोशन हुआ हिन्दुस्तान।
धर्म का दीप जलाने वाले,
सत्य-धर्म के गायक सुजान।
जाति-भेद को मिटाने चले,
मानवता का पाठ पढ़ाने चले।
अज्ञान के तम को दूर किया,
धर्म का सच्चा रूप दिया।
निडर थे, सच्चे संन्यासी,
स्वाभिमान में अडिग
अविनाशी।
हृदय में लेकर करुणा की ज्योति,
विचरते थे बनकर धर्म-मोती।
जब असत्य का ताण्डव फैला,
स्वामी ने सत्य का बिगुल बजाया।
शुद्धि आन्दोलन का जो बीज बोया,
उससे धर्म का नव-युग आया।
पर सच्चाई को कुचलने वालों ने,
स्वामी पर वार किया निर्दयी।
रक्त से धरती लाल हुई,
पर हार न मानी इस वीर संन्यासी ने।
उनकी वाणी आज भी गूँजती,
सत्य की बातें हर दिल को मोहती।
स्वामी श्रद्धानन्द, तुम्हारा बलिदान,
हमेशा रहेगा अमर, महान्।
जग को सिखाया जीने का धर्म,
तुम्हारा जीवन बना प्रेरणा अर्चन।
तुम पर न्योछावर हर श्रद्धा,
स्वामी, तुम्हें शत-शत नमन।

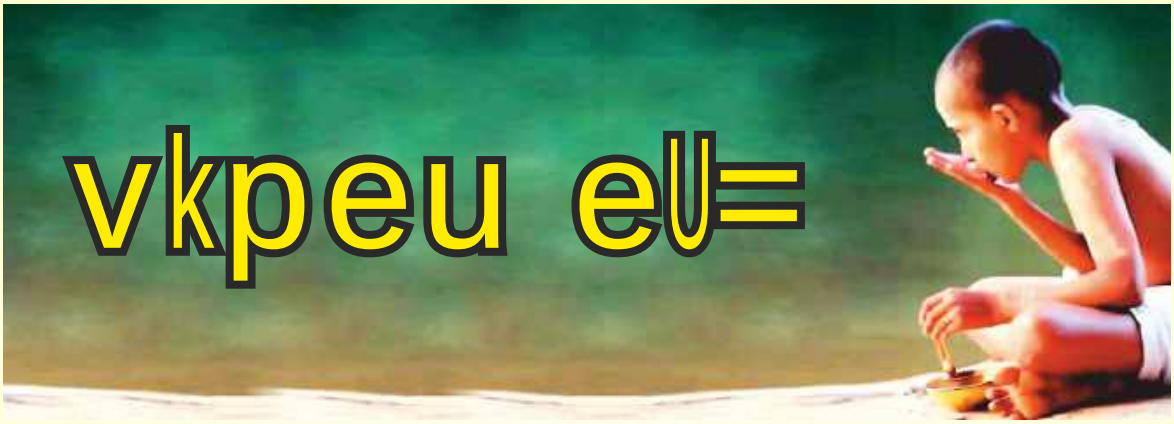

(सन्ध्या अथवा अग्निहोत्र के मन्त्रों का पाठ करने से पूर्व मन्त्रोच्चारण के पश्चात् आचमन किया जाता है। आचमन करने का उद्देश्य क्या है? इस सम्बन्ध में प्रस्तुत है एक वार्तालाप)

कुछ समय पहले की बात है। एच.एस.सी. परीक्षा में लॉरियेट बने छात्र-छात्राओं के नाम स्थानीय रेडियो पर सूचित किये गए। रॉयल कॉलिज पोर्टलुई के विद्यार्थी-विद्यार्थिनियों में पाँच लॉरियेट हुए। उनमें श्याम शरण नामक एक युवक था।

पुत्र को लॉरियेट होते देख माता-पिता गद्गद हो गए। अपने बेटे को बधाई देते हुए पिता ने कहा, 'श्याम, परमेश्वर ने तुम्हें सुबुद्धि दी। साथ ही पूरी मेहनत करने की शक्ति भी। उस न्यायकारी ईश्वर को हमें बहुत धन्यवाद करना चाहिए। चलें, इस खुशी के मौके पर हम एक बृहद् यज्ञ का आयोजन करें।'

पूरा परिवार महायज्ञ के अनुष्ठान के लिए तैयार हो गया। उस यज्ञ के लिए एक बड़े ही कुशल पुरोहित को वरण किया गया। यज्ञ के दिन पुरोहित आधा घण्टा पहले ही यजमान के घर पधारे। उन्होंने लॉरियेट बने युवक को बधाई दी।

यज्ञ प्रारम्भ होने से पहले उस युवक ने पंडित जी को बताया कि मेरे माता-पिता प्रतिदिन अग्निहोत्र करते हैं। अग्निहोत्र से पहले हम सब अपने सीधे हाथ की हथेली में थोड़ा-सा जल लेकर पीते हैं।

'पंडित जी, कृपया यह बताइये कि इस विधि को क्या कहते हैं और इसे क्यों करना चाहिए?' एक साँस में ही वह पूछ बैठा।

उस युवक के प्रश्न को सुनकर पंडित जी प्रसन्नता पूर्वक बोले, 'इस विधि को 'आचमन' कहते हैं।'

आचमन के समय हमें विधि अनुसार तीन मन्त्रों का उच्चारण स्पष्टतापूर्वक करना चाहिए। यदि गले में कफ हो तो उच्चारण में कठिनाई होती है। अपने स्वर को स्पष्ट करने के लिए हम आचमन करते हैं और अपना गला साफ कर लेते हैं।

युवक ने पुनः प्रश्न किया- 'पण्डित जी, आचमन मन्त्रों का अर्थ क्या है?' कृपया आचमन के हर एक मन्त्र के अर्थ पर कुछ प्रकाश डालिए।'

पण्डित जी ने प्रथम मन्त्र का उच्चारण किया-

ओं अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा।

इस मन्त्र का अर्थ बताते हुए कहा-

'हे अमृत स्वरूप परमेश्वर, आप हमारे लिए बिछौना हैं। जिस तरह बिछौना नीचे से हमारी रक्षा करता है, उसी प्रकार आप बिछौना के समान नीचे से हमारी रक्षा करते हैं।'

वह युवक बड़ा ही जिज्ञासु था। उसने फिर प्रश्न किया, 'पण्डित जी ईश्वर नीचे से हमारी रक्षा कैसे करते हैं?'

पण्डित जी ने उत्तर दिया, 'परमेश्वर ने यह धरती बनाई है। धरती में हम बीज बोते हैं। उन्हें सींचते हैं, वे अंकुरित होते हैं, उन्हें सूरज का ताप मिलता है। इस तरह वे पेड़-पौधे बनते हैं। उनमें फूल-फल लगते हैं और हमें तरह-तरह के खाद्य पदार्थ देते हैं। इन खाद्य पदार्थों में पोषक तत्व होते हैं। इन्हें खाने से हमारी रक्षा होती है। परमेश्वर ने यह धरती बनाई है, इस तरह ईश्वर

धरती रूपी बिछौना बनकर हमारी रक्षा करते हैं।
'पण्डित जी, दूसरे मन्त्र में क्या प्रार्थना है?' उस युवक ने बड़ी उत्सुकता पूर्वक पूछा।
पण्डित जी ने दूसरे मन्त्र का उच्चारण किया-
ओं अमृतापिधानमसि स्वाहा।
इस मन्त्र का अर्थ बताते हुए कहा- 'हे अमृत स्वरूप परमात्मन्! आप हमारा ओढ़ना हैं। हमारा यह कथन सत्य और शोभायुक्त हो।'
उस युवक ने पुनः जिज्ञासा प्रकट की कि ईश्वर हमारा ओढ़ना कैसे हैं?
पंडित जी बोले- 'जिस तरह धरती नीचे से बिछौना बनकर हमारी रक्षा करती है, वैसे ही दयालु ईश्वर ऊपर से भी हमारी रक्षा करते हैं। उस परमेश्वर ने घने वनों में बड़े-बड़े वृक्ष, तरह-तरह के पौधे और अनेक प्रकार की वनस्पतियाँ उत्पन्न की हैं। ये सभी वायु को शुद्ध रखते हैं। शुद्ध वायु के माध्यम से हमारी रक्षा होती है। अन्तरिक्ष में बहने वाली वायु को जब मनुष्य द्वारा निर्मित कारखाने अपने धुओं से प्रदूषित कर देते हैं तब परमात्मा द्वारा उत्पन्न ये पेड़-पौधे ऑक्सीजन बिखेर कर रोग के कीटाणुओं से हमें बचाते हैं। ये ओढ़ना स्वरूप बनकर कष्ट-कलेशों से हमारी रक्षा करते हैं। प्रदूषण को नष्ट करते हैं। इन्हीं के द्वारा सर्वरक्षक प्रभु मानो ऊपर से हमारी रक्षा करते हैं।
दूसरे मन्त्र की व्याख्या से सन्तुष्ट होकर उस युवक ने तीसरे मन्त्र का अर्थ पूछा।
पण्डित जी ने तीसरे मन्त्र का उच्चारण किया-
ओं सत्यं यशः श्रीर्मयि श्रीः श्रयतां स्वाहा।
और संक्षेप में इस मन्त्र पर प्रकाश डाला- 'हे अमृत स्वरूप परमात्मन्! सचाई से प्राप्त किया हुआ यश और धन मुझमें आश्रय ग्रहण करें।'
उस युवक ने फिर प्रश्न किया-
'कृपया बताइए कि 'यश' शब्द का अर्थ क्या है?'
उत्तर में पण्डित जी ने कहा- 'इसके कई अर्थ हैं, नेकनामी , कीर्ति, बड़ाई, प्रशंसा आदि। अच्छे काम करने से जो कीर्ति मिलती है, उसे यश कहते है।'
उस जिज्ञासु युवक ने कहा कि इस मन्त्र में प्रार्थना की गई है कि सत्यं यशः अर्थात् हमें सत्य यश प्राप्त हो। प्रश्न उठता है कि क्या झूठा यश भी होता है?-
पण्डित जी ने उत्तर दिया, 'जी हाँ! बेईमान लोग किसी ऊँचे पद पर बैठकर जो मान कमाते हैं, उनका नाम कुछ समय तक तो चलता है, परन्तु कुछ काल बाद जब उनकी बेईमानी पकड़ी जाती है तब उनका यश मिट्टी में मिल जाता है। यही है झूठा यश।'
पण्डित जी ने एक और उदाहरण देते हुए कहा- कि यह अकसर देखा जाता है कि कोई मुक्केबाज अपने प्रतिद्वन्द्वी को मुक्केबाजी में हराकर नाम कमा लेता है, पर उसका नाम सदा नहीं चलता। जब कोई दूसरा मुक्केबाज उसे हरा डालता है, तब उसके प्रशंसक भी उसका नाम लेना छोड़ देते हैं। यही झूठा यश है, जो उसे कुछ काल के लिए मिला था।
पण्डित जी ने आगे बताया कि इस विश्व के धरातल पर ऐसे कई महापुरुष हुए हैं, जिनके सुकर्मों की सुगन्ध से विश्व का इतिहास सुगन्धित हो उठा है। मर्यादा पुरुषोत्तम राम, योगेश्वर श्री कृष्ण आदि महामानवों का यशोगान सहस्त्रों सदियों से इसलिए होता आया है कि इन महापुरुषों ने सत्य यश पाकर अपने नाम अमर कर लिया, वे पूजनीय हो गये।
उस युवक ने अगला प्रश्न किया कि प्रस्तुत मन्त्र में जो 'श्री' शब्द है, उस का अर्थ क्या है?
पण्डित जी ने उत्तर दिया कि 'श्री' के कई अर्थ हैं, जैसे लक्ष्मी, ऐश्वर्य, सम्पत्ति, धन आदि। उन्होंने आगे कहा कि हम सब धन कमाएँ, इसकी प्राप्ति के लिए कठिन परिश्रम करें। परन्तु सुपथ पर चलकर ही धन का अर्जन करना चाहिए। इस सन्दर्भ में उन्होंने एक कहानी प्रस्तुत की, जो इस प्रकार है-
एक सरकारी अफसर था। वह बड़ा रिश्वतखोर था। बिना रिश्वत लिए किसी के भी आवेदन पर ध्यान नहीं देता था। जो कोई उसे रिश्वत देता, वह उसका काम शीघ्रता से पूरा कर देता। वह घूसखोरी के कारण गाँव में

बड़ा बदनाम था। वर्षों तक रिश्वत का धन जमा करता रहा। उसने बेईमानी से कमाये रुपयों से एक सुन्दर मकान बनाया। उस घर में वह अपने परिवार के साथ एक ही साल रह पाया कि वह घर भयानक अग्निकांड का शिकार हो गया। पूरा मकान जलकर राख हो गया। जिन लोगों से उसने घूस ऐंठा था, वे बोल उठे कि भगवान् ने उसे बेईमानी का कितना भारी दण्ड दिया।

पण्डित जी ने कहा कि सत्य धन वही है, जो सुमार्ग पर चलकर कमाया जाता है। आचमन मन्त्र का उच्चारण करके परमात्मा से यजमान प्रार्थना करता है कि वह सुधन प्राप्त करे।

अन्त में उस युवक ने कहा कि तीनों आचमन मन्त्रों में ईश्वर को 'ओ३म्' और 'अमृत' कहा गया है। उसने इन दोनों नामों के अर्थों को जानने की इच्छा प्रकट की।

पण्डित जी बोले- 'इन दोनों नामों में ईश्वर की स्तुति है। ईश्वर सब की रक्षा करते हैं, इसलिए उन्हें 'ओ३म्' नाम से सम्बोधित करते हैं। 'ओ३म्' ईश्वर का निज नाम है। उनका सब से श्रेष्ठ नाम है, सब से ऊँचा नाम है।'

'अमृत' शब्द का अर्थ बताते हुए, पण्डित जी बोले, 'जो न मरे, जो मृत्यु से रहित हो, जिसका कभी नाश न हो, उसे 'अमृत' कहते हैं। 'अमृत' ईश्वर का एक गौणिक नाम है। गौणिक नाम द्वारा ईश्वर के गुणों का गान किया जाता है। इस पद के द्वारा बताया गया है कि ईश्वर 'अमृत' है, अविनाशी है अर्थात् नाश रहित है।'

अपनी जिज्ञासा को शान्त करने के पश्चात् उस युवक ने पण्डित जी के प्रति आभार प्रकट किया और अपने पिता द्वारा आयोजित उस बृहद् यज्ञ में प्रसन्नतापूर्वक यजमान के रूप में आसान ग्रहण किया।

{मॉरीशस प्रान्तीय सभा के पूर्व प्रधान डॉ. उदय नारायण गंगू स्वाध्यायशील वैदिक विद्वान् तथा प्रवक्ता हैं। प्रस्तुत लेख में वार्तालाप शैली में आपने आचमन मन्त्रों की मनोहारिणी व्याख्या की है। आशा है सुधी पाठक लाभान्वित होंगे।}

डॉ. उदय नारायण गंगू

दयानन्द के अनन्य भक्त पद्मश्री दयाल मुनि जी का निधन

महर्षि दयानन्द के अनन्य भक्त, वेदों के गुजराती भाष्यकार, आयुर्वेद पर १८ पुस्तकों के लेखक, वैदिक धर्म-संस्कृति के महान् प्रचारक पद्मश्री दयाल मुनि जी का निधन सम्पूर्ण आर्य जगत् के लिए महाशोक एवं अपूरणीय क्षति है।

श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास; नवलखा महल सांस्कृतिक केन्द्र, उदयपुर तथा सत्यार्थ सौरभ परिवार की ओर से उस महान् आत्मा को विनम्र श्रद्धांजलि एवं परमपिता परमेश्वर उस दिव्य आत्मा को अपनी ममतामयी गोद में स्थान प्रदान करें, ऐसी प्रार्थना है।

सत्यार्थप्रकाश प्रचार सहयोग निधि

सत्यार्थ प्रकाश से उत्कृष्ट कोई ग्रन्थ नहीं जिसके प्रकाशन में आपकी पुण्य दान राशि का प्रयोग हो। सत्यार्थ प्रकाश प्रचार हेतु, कम राशि में अधिक संख्या में यह महान् ग्रन्थ जन-जन के हाथों में पहुँच सके, एतदर्थ निम्न योजना निर्मित की गई है-

सत्यार्थप्रकाश के प्रचार हेतु कृपया निम्नानुसार सहयोग कर लागत मूल्य से आधी कीमत में सत्यार्थप्रकाश का दिया जाना सुनिश्चित करें। आपके द्वारा सहयोगार्थ प्रदान की गई राशि के समक्ष अंकित प्रतियों पर आपका अथवा आपके किसी प्रियजन का चित्र ग्रन्थ के कवर पर दिया जावेगा।

1000 प्रतियों के प्रकाशन हेतु 25000 रुपये का दान देने का श्रम करें। 10 प्रतियाँ निशुल्क आपके पास भेजी जाएँगी।

आपका दान आयकर अधिनियम की धारा ८० जी के अन्तर्गत करमुक्त होगा। राशि न्यास के नाम ड्राफ्ट या चैक द्वारा भेजें अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया, उदयपुर खाता क्रमांक 310102010041518, IFSC-UBIN 0531014 में जमा कर सूचित करें।

अशोक आर्य, अध्यक्ष-न्यास | भवानीदास आर्य, मंत्री-न्यास | डॉ. अमृत लाल तापड़िया, संयुक्तमंत्री-न्यास

मैं आर्यसमाजी कैसे बना?

-स्व. श्री महात्मा हंसराज जी

{आर्यसमाज के ऐसे स्तम्भ, जिन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन, समस्त क्षमताएँ लगाकर आर्यसमाज के भवन को भव्यता प्रदान की, उनके संस्मरण यदि हम आज पढ़ें तो प्रेरणा प्राप्त होती है कि कैसे विषम परिस्थितियों में भी हमारे पूर्वजों ने वैदिक ध्वजा को दिग्दिगन्त में लहराए रखा। यहाँ महात्मा हंसराज जी के संस्मरण प्रस्तुत हैं।}

'अपने ग्राम में मैंने केवल एक बार किसी वृद्ध व्यक्ति से सुना था कि लाहौर में एक साधु आया हुआ है, जो ईसाइयों से वेतन पाता है तथा हिन्दू धर्म के विरुद्ध उपदेश करता है। उस समय मुझे यह ज्ञात नहीं था कि यह ऋषि दयानन्द हैं तथा उनका उपदेश क्या है। मेरी आयु उस समय छोटी थी और न ही विद्या की योग्यता थी। जब मैं सन् १८७९ में लाहौर आया तो मेरे बड़े भाई ने जो उस समय डाकघर में कार्य करते थे, मुझे राजकीय विद्यालय में प्रविष्ट करा दिया। उस समय विद्यालय का भवन नहीं था। राजा ध्यानसिंह की हवेली में विद्यालय की श्रेणियाँ लगा करती थीं। सरदार हरिसिंह जो बाद में निरीक्षक (Inspector) होकर विख्यात हुए, मिडल स्कूल के हैडमास्टर थे। मैं कुछ मास उनकी छत्र छाया में विद्या अध्ययन करता रहा। फिर बीमार होने के कारण मैंने राजकीय विद्यालय छोड़ दिया। स्वस्थ होने पर भाई साहब ने मुझे यूकैल्ड की शिक्षा स्वयं दी। और फिर रंग महल में मिशन स्कूल में प्रविष्ट करा दिया। मैं वहाँ पढ़ता रहा। बाबू काली प्रसून चटर्जी जो बाद में आर्य समाज के उत्तम सेवक बने, हमारे साथ स्कूल में पढ़ते थे। वह अपनी विनोद प्रियता से हमको हँसाते रहते थे। एक बार उन्होंने उस समय की एक पुस्तक 'रसूले हिन्द' के कुछ वाक्य पढ़ कर बताया कि इसमें हिन्दुओं की कितनी निन्दा की गई है। इस किताब में हिन्दुओं के जो चरित्र दिये गये हैं वे गंवारों और चोरों के हैं। मुसलमानों के चरित्र सज्जन और धनिकों के हैं।

मैंने होशियारपुर स्कूल में संस्कृत अन्य भाषा के रूप में ली। मैं फारसी भी पढ़ता रहा। मिशन स्कूल में संस्कृत और फारसी दोनों का अध्ययन करता रहा। हमारे विद्यालय के मुख्याध्यापक पण्डित तेजमान थे। वे कहा करते थे कि एक बार उनका स्वामी दयानन्द के साथ वार्तालाप हुआ था। वह वार्तालाप में असफल इसलिए हुआ कि स्वामी दयानन्द ने कई भूत-प्रेतों को सिद्ध किया हुआ था और उनकी शक्ति के कारण वे

विरोधियों को वश में कर लेते थे। मैंने उस समय तक न आर्य समाज का मन्दिर देखा था और न ही स्वामी जी की कोई पुस्तक पढ़ी थी। आर्य समाज में उपदेश देने वाले भी बहुत कम थे इसलिये मैंने किसी आर्य समाजी का व्याख्यान भी नहीं सुना था।

उस समय मिशन स्कूल में दो मास्टर प्रसिद्ध थे। पादरी फोरमैन साहब तो स्कूल के प्रिंसिपल थे। विद्यालय के हॉल में सब विद्यार्थियों और अध्यापकों को एकत्रित करके नमाज पढ़ाते और इंजील की किसी आयत की व्याख्या करते। विद्यार्थियों के साथ उनका विशेष सम्बन्ध नहीं था। स्कूल के हैडमास्टर श्रीरामचन्द्र दास बड़े योग्य, लड़कों से प्रेम करने वाले, देश प्रेमी तथा उदार हृदय ईसाई थे। सेकिण्ड मास्टर श्री बोस अपने विषय में कोई विशेष योग्यता नहीं रखते थे परन्तु मिशन स्कूल के लिए धन एकत्रित करने में बड़े निपुण थे। लड़के उनसे विनोद भी कर लेते थे। इसका कारण यह था कि अवकाश देना और शुल्क तथा जुर्माना प्राप्त करना उन का कार्य था। छुट्टी देते समय वे देख लिया करते थे कि उस दिन कोई हिन्दुओं का त्योहार है अथवा नहीं। उदाहरणतः श्राद्धों के दिनों में जो विद्यार्थी छुट्टी लेता उससे वह दो पैसे प्रतिदिन उगा लिया करते थे। कभी-कभी झगड़ा भी हो जाता। परन्तु अध्यापक महोदय स्कूल की आर्थिक दशा का बहुत ध्यान रखते थे। मेरे सम्बन्ध में उनका यह विचार था कि मैं योग्य विद्यार्थी हूँ परन्तु साथ ही कुछ चंचल भी हूँ, क्योंकि मैं कह दिया करता था कि जिन त्यौहारों में सम्मलित होना ईसाई पादरी ठीक नहीं समझते, उनमें सम्मलित होने का टैक्स लेते हैं। टैक्स लेना उचित नहीं।

एक दिन हमारी दसवीं श्रेणी हैडमास्टर महोदय के पास अंग्रेजी की पुस्तक जिस का नाम सीनियर रीडर (Senior Reader) था, पढ़ रहा था। अध्यापक महोदय जानते थे कि मैंने हजरत ईसा के जीवन चरित्र की पुस्तक, जो हमारा कोर्स था अच्छी प्रकार पढ़ा हुआ है। अतः इस पुस्तक में से मुझसे बहुधा प्रश्न किया करते थे। मैं उनका सन्तोषपूर्ण उत्तर दे देता था और वे मुझसे प्रसन्न थे। सीनियर रीडर में प्रथम पाठ यह था कि संसार को बने हुए छः हजार वर्ष व्यतीत हुए हैं। जो मनुष्य आरम्भ में हुए उनका अनुभव वर्तमान मनुष्यों की अपेक्षा बहुत कम था और इसलिये उनकी योग्यता और विद्या वर्तमान समय की अपेक्षा बहुत कम थी।

हैडमास्टर महोदय ने मुझसे पूछा कि हंसराज! क्या यह सच है? मैंने बचपन की चंचलता में अध्यापक महोदय पर एक उल्टा प्रश्न कर दिया। मैंने पूछा कि क्या पिता का अनुभव अधिक होता है या पुत्र का? इसका उत्तर अध्यापक महोदय क्या दे सकते थे। यह तो नहीं कह सकते थे कि पिता का अनुभव कम होता है। वे कुछ तंग से हो गये। उन्होंने कहा- ''प्राचीन हिन्दुओं को ईश्वर का ज्ञान नहीं था। वे अग्नि, वायु, जल और सूर्य आदि की पूजा किया करते थे।'' मैंने कहा- 'श्रीमान्! यह बात ठीक नहीं।' 'कसिस हिन्द' में मैंने पढ़ा हुआ था कि हिन्दुओं को ईश्वर का ज्ञान था। वे परमेश्वर को मानते थे जिसके पाँव नहीं परन्तु प्रत्येक स्थान पर पहुँचता है। उसके हाथ नहीं परन्तु सब ग्रहण करता है, इत्यादि। मैंने सब कुछ सुना दिया। इसका उत्तर क्या बन सकता था। परन्तु मुझे यह पता नहीं था कि अग्नि वायु की पूजा के सम्बन्ध में ठीक विचार क्या हैं। मैंने यूँ ही यह सनातनी उत्तर दे दिया कि प्राचीन आर्य लोग इन भूतों के द्वारा परमेश्वर की पूजा किया करते थे न कि भूतों की। हैडमास्टर महोदय संस्कृत से अनभिज्ञ थे वे क्या कह सकते थे। अन्त में उन्होंने कहा कि देखो इस रीडर में यह लिखा है और इसलिए यह सत्य है, यह उनकी युक्ति थी। मैंने तुरन्त कह दिया कि रीडर बनाने वाले की मूर्खता है जो उसने ऐसा लिख दिया। इस पर उन्होंने मुझे तीन चार बेंत लगाये और कक्षा से बाहर कर दिया। मैं बाहर निकल आया और अगले दिन सैकिण्ड मास्टर साहब के पास गया और कहा कि हैडमास्टर महोदय के पास शिफारिश करके

मुझे कक्षा में सम्मलित होने की आज्ञा ले दें। वे बंगाली तो थे ही। उर्दू अच्छी प्रकार नहीं बोल सकते थे, कहा, ''हंसराज! मैं तो पहले ही समझता था कि तुम चंचल हो, तुम्हें ऐसा नहीं करना चाहिये था, मैं प्रयत्न करूँगा।'' दो-तीन दिन में मुझे कक्षा में बैठने की आज्ञा मिल गई और मैंने भी अपने हृदय में यह ठान लिया कि मैं श्रेणी में ईसाई मत के विरुद्ध कुछ नहीं कहूँगा। वास्तविकता यह थी कि मैं अपनी कक्षा में एक योग्य छात्र था और हैडमास्टर भी मुझसे प्रेम करते थे। यदि मैं भूल नहीं करता, तो उस साल मिशन स्कूल में १७ छात्रों में से केवल मैं ही मैट्रिक में उत्तीर्ण हुआ।

श्री रामचन्द्र दास का प्रेम मेरे साथ बहुत था। उनके देश प्रेम की बातों को हम बहुत पसन्द करते थे। यद्यपि वे इसाई थे फिर भी मेरे हृदय में उनका बड़ा आदर था। यह जानते हुए भी कि मैं आर्य समाजी हूँ और ईसाई मत की शिक्षा को अशुद्ध समझता हूँ, वे बहुत बार यही कहा करते थे कि मुझे अपने विद्यार्थी हंसराज पर बड़ा गर्व है। मैं भी जब कभी उनसे मिलता था तो उनके घुटनों पर हाथ लगा कर उनको नमस्ते कहता था। एक बार मैंने उनकी सेवा में मिठाई अर्पित की और उन्होंने उसे स्वीकार कर मुझे सम्मानित किया।

प्रधानाध्यापक महोदय के साथ मेरा जो विवाद हुआ था उससे मेरे हृदय पर विशेष प्रभाव पड़ा और मुझे यह जानने की इच्छा हुई कि क्या हमारे पूर्वज प्रकृति के उपासक थे। अथवा केवल ईश्वर को ही मानते और पूजते थे। अतः मैंने इधर-उधर पूछकर आर्य समाज के साप्ताहिक सत्संग में जाना प्रारम्भ कर दिया। मैं आर्य समाज के उपदेशों को सुनता और पत्रों को पढ़ता। लाहौर समाज के प्रधान स्वर्गीय ला. सांईदास जी की दृष्टि नये व्यक्तियों पर जो समाज में आवें, बड़ी जल्दी पड़ती थी। उन्होंने मुझे बुलाया और आज्ञा दी कि मैं सन्ध्या याद कर लूँ। उन्होंने विद्यार्थियों का उत्साह बढ़ाने के लिये यह सूचना भी दे दी कि जो विद्यार्थी उनको सन्ध्या कण्ठस्थ सुना देगा उसको वे पारितोषिक देंगे। मैंने सन्ध्या उन्हें सुना दी और उनसे दो रुपया पारितोषिक के रूप में प्राप्त कर लिया। मैं समाज के साप्ताहिक सत्संगों से कभी अनुपस्थित नहीं होता। यद्यपि समाज में उपदेश पं. अखिलानन्द जी के और पण्डित मूलराज जी के हुआ करते थे और उनका भाषण देने का ढंग इस प्रकार था कि प्रथम का तो वाक्य कभी समाप्त ही नहीं होता था और दूसरे महोदय की एक मन्त्र की व्याख्या दूसरे मन्त्र की व्याख्या से कदापि भिन्न न होती थी। इनके पश्चात् भाई दत्तसिंह जी और जौहरसिंह जी के लैक्चर सिख इतिहास और ईसाई मत का खण्डन बड़े आनन्द से सुनते थे। उस समय ये दोनों महोदय आर्य समाज के सदस्य और लैक्चरर थे और आर्य समाज में उनका अच्छा मान था। बाद में विशेष कारणों से वे आर्य समाज के कट्टर विरोधी बन गये। मुझे साप्ताहिक सत्संग में सम्मलित होने की इतनी लग्न थी कि मैं समाज के सत्संगों से अपने मैट्रिक की परीक्षा के दिनों में भी अनुपस्थित नहीं रहा।

{नोट- ये लेख स्वामी जगदीश्वरानन्द द्वारा सम्पादित ''वेद-प्रकाश'' मासिक पत्रिका के १९५८ के अंकों में ''मैं आर्यसमाजी कैसे बना?'' नामक शीर्षक से प्रकाशित हुए थे।}

प्रस्तुति- प्रियांशु सेठ

च्यवनप्राश केवल रोगी मनुष्यों की ही औषध नहीं है अपितु स्वस्थ मनुष्यों के लिए भी उत्तम टॉनिक है। बालक वृद्ध, युवा, दुर्बल, शोष रोगी, हृदय के रोगी, राजयक्ष्मा (टी.बी.) के रोगियों को भी इससे अच्छा लाभ होता है। इसके सेवन से खाँसी, श्वास, छाती का जकड़ना, तृषा, वातरक्त, वात रोग, पित्तरोग, शुक्रदोष एवं मूत्र दोष ठीक हो जाते हैं। यह बल, बुद्धि व स्मरण शक्तिवर्धक है। इससे कान्ति वर्ण व प्रसन्नता प्राप्त होती है। वृद्धावस्था को दूर रखता है। यह फेफड़ों को मजबूत करता है, दिल को ताकत देता है। पुरानी खाँसी, दमा में बहुत लाभदायक है। पेट साफ रखता है। अम्लपित्त, वीर्य विकार व स्वप्न दोष नष्ट करता है। बच्चों को बलवान बनाता है। दुर्बल व कमजोर बच्चों को हृष्ट-पुष्ट व मोटा ताजा बना देता है, उनका वजन भी बढ़ाता है।

इसका सेवन सब ऋतुओं में किया जा सकता है, ग्रीष्म ऋतु में भी इसका सेवन किया जा सकता है क्योंकि इसका प्रधान द्रव्य आंवला पित्तशामक व शीतवीर्य होता है। अतः यह गर्मी नहीं करता। यह स्वास्थ्यवर्धक उत्तम टॉनिक तो है ही, यह अनुपान भेद से अनेक रोगों में प्रयुक्त होता है। यह रोगों को ठीक करने के साथ शरीर की शक्ति बनाये रखता है। निरन्तर प्रयोग से शरीर की रोग प्रतिकार शक्ति को बढ़ाता है जिससे रोग उत्पन्न ही न होने पायें। आयुर्वेद का मुख्य उद्देश्य है- **'स्वस्थस्य स्वास्थ्य रक्षणम्, आतुरस्य विकार प्रशमनम्च'** अर्थात् स्वस्थ व्यक्ति के स्वास्थ्य की रक्षा एवं रोगी मनुष्य के रोग का शमन। च्यवनप्राश दोनों उद्देश्यों की पूर्ति करने में सक्षम है।

च्यवनप्राश उत्तम गुणवत्तायुक्त ताजी जड़ी-बूटियों द्वारा बना हुआ ही प्रयोग करना चाहिए तभी वह पूरा लाभ करता है। आज-कल बहुत सी कम्पनियों का च्यवनप्राश, बाजार में उपलब्ध है। कई कम्पनियाँ च्यवनप्राश में शक्तिवर्धक रसरसायन, भस्में व श्वास-कास में लाभदायक और यौन शक्ति वर्धक औषधियों का मिश्रण करके भी बाजार में उपलब्ध कराती हैं। किसी विश्वसनीय कम्पनी का च्यवनप्राश अपने शरीर की प्रकृति व रोगानुसार अन्य औषधियाँ मिलाकर अपने चिकित्सक के परामर्श के अनुसार प्रयोग कर सकते हैं।

मात्रा एवं अनुपान – १० से २० ग्राम च्यवनप्राश प्रातः एवं सायं गाय या बकरी के दूध के साथ सेवन करें।

रोगानुसार च्यवनप्राश का प्रयोग–

दौर्बल्य में- सिद्धमकरध्वज १२५ मि.ग्रा. या सामान्य मकरध्वज १२५ मि.ग्रा. को खूब बारीक शहद में पीसकर च्यवनप्राश के साथ दूध से लेवें। इससे रोग प्रतिरोधक शक्ति बढ़ती है, शरीर के सब अंग-प्रत्यंग बलवान होकर सुचारु कार्य करने में सक्षम हो जाते हैं।

अजीर्ण-आध्मान आदि उदर विकारों में- प्रातः सायं भूखे पेट च्यवनप्राश गाय के दूध के साथ लेवें व भोजन के बाद द्राक्षासव २०-२० मि.लि.

समभाग जल मिलाकर पीवें।

क्षय रोग की प्रारम्भिक अवस्था में- च्यवनप्राश २० ग्राम, मृग शृंग भस्म २५० मि.ग्रा., प्रवाल पिष्टी २५० मि.ग्रा., मकरध्वज १२५ मि.ग्रा. मिलाकर दूध से देवें। द्राक्षासव २० मि.लि. समभाग जल मिलाकर भोजनोत्तर पिलावें। क्षय (टी.बी.) की प्रारम्भिक अवस्था में जब धातु क्षीणता की स्थिति हो तब यह औषधि कार्य करती है। जब रोग बढ़ गया होतो क्षय के बैक्टिरिया को नष्ट करने वाली औषधियों का सेवन करना आवश्यक है। शक्तिवर्धन हेतु एवं धातुपोषण हेतु इन औषधियों का प्रयोग साथ मे कर सकते हैं। रक्ताल्पता की स्थिति में चयनप्राश २० ग्राम, स्वर्ण बसन्त मालती और अभ्रक भस्म १२५-१२५ मि. ग्रा., मण्डूर भस्म २५० मि.ग्रा. शहद मिलाकर प्रातः-सायं देने में क्षय में विशेष लाभ होता है।

खाँसी व श्वास में- च्यवनप्राश २०ग्राम, सितोपलादि चूर्ण ३ ग्राम सुबह-शाम अदरक मिलाकर गर्म किये दूध से लेवें व खाने के बाद द्राक्षासव व कनकासव १५-१५ मि.लि. बराबर पानी मिलाकर पीवें।

इसी प्रकार अन्य बहुत से रोगों में च्यवनप्राश का प्रयोग कर सकते हैं। स्वस्थ मनुष्य भी इसका नियमित प्रयोग कर रोगों से बचा रह सकता है।

लेखक- वेदमित्र आर्य
सेवानिवृत्त आयुर्वेदिक चिकित्सक
१३ श्री राम नगर, से.-६, हिरणमगरी, उदयपुर

सत्यार्थ सौरभ की रजिस्टर्ड पोस्टल सेवा

सत्यार्थ सौरभ के सम्मानित सदस्यगण! हमें पता है कि आप लोगों को सत्यार्थ सौरभ पत्रिका या तो समय से नहीं मिलती है या फिर मिलती ही नहीं है। इसलिए न्यास ने एक निर्णय लिया है कि अगर आप एक वर्ष में रुपये 264/- (Postage हेतु) देते हैं तो आपको पत्रिका रजिस्टर्ड भेजी जाएगी। ताकि फिर भी पत्रिका प्राप्त नहीं होती है तो आप पोस्ट ऑफीस में शिकायत दर्ज करवा सकते हैं जिससे ये समस्या सुलझ सकती है।

पत्रिका से सम्बन्धित किसी प्रकार की जानकारी/शिकायत के लिये निम्न चलभाष पर सम्पर्क करें।
09314535379

पाठकों के पास 'सत्यार्थ सौरभ' डाक विभाग की अव्यवस्था के कारण अनेक बार समय पर नहीं पहुँच पाती है। पाठक न्यास को ही दोषी मानते हैं, जिसे अनुचित भी नहीं कहा जा सकता। परन्तु वास्तविकता है कि यहाँ से प्रत्येक माह की 7 तारीख को पत्रिका प्रेषित कर दी जाती है। पश्चात् सब कुछ डाक विभाग की कृपा पर निर्भर करता है। फिर भी आपसे निवेदन है कि प्रत्येक माह की 20 तारीख तक भी पत्रिका न मिलने पर कृपया इसी चलभाष पर सम्पर्क करें।

- सम्पादक

दीपावली पर नवसस्येष्टि यज्ञ सम्पन्न

आर्य समाज हिरण मगरी, उदयपुर में १ नवम्बर २०२४ को महर्षि दयानन्द सरस्वती निर्वाण दिवस एवं दीपावली का पर्व हर्षोल्लास पूर्वक मनाया गया। पं.रामदयाल मेहरा के पौरोहित्य में विशेष यज्ञ सम्पन्न हुआ। जिसमें श्रीमती निर्मला टांक, शारदा गुप्ता, प्रीति चौहान, भँवर लाल आर्य, अम्बालाल सनाढ्य, नूतन गर्ग, ओम प्रकाश कुमावत आदि यजमानों ने यज्ञ में आहुतियाँ दीं। श्रीमती दुर्गा कुमावत, कृष्ण कुमार सोनी, सुभाष कोठारी आदि ने भजन प्रस्तुत किए।

पर्व के महत्व पर प्रकाश डालते हुए आर्य समाज के मंत्री वेदमित्र आर्य ने कहा कि दीपावली पर्व का मूल नाम शारदीय नवसस्येष्टि पर्व है। यह शरद् ऋतु में उत्पन्न नयी फसल के अन्न द्वारा किया जाने वाला यज्ञ है। इस अवसर पर खरीफ की फसल का अन्न घर में आता है तथा रबी की फसल की बुवाई प्रारम्भ होती है। ये दोनों फसलें आर्यावर्त्त (भारत) की मुख्य फसलें हैं। भारतीय वैदिक संस्कृति में भोजन ग्रहण करने से पहले उसे यज्ञ में आहुत करने की परम्परा रही है। साथ ही आपने महर्षि दयानन्द सरस्वती के जीवन के अन्तिम दृश्य का चित्रण पढ़कर सुनाया जिसे सुनकर श्रोता अभिभूत हो गये। भूपेन्द्र शर्मा द्वारा शान्ति पाठ एवं जयघोष के साथ सभा समाप्त हुई।

- रामदयाल मेहरा; प्रचार मंत्री, चलभाष- ९४६०८८३२२२

कहानी दयानन्द की

कथा सरित

महर्षि दयानन्द जी के समय में इस देश की जो स्थिति थी उससे देश को निकालने के लिए एक समग्र क्रान्ति की आवश्यकता थी जिसके अन्तर्गत न केवल विदेशी शासकों को भारत से बाहर खदेड़ना था बल्कि स्वदेश में भी जो नाना प्रकार की कुरीतियों ने स्थान बनाकर के भारत को उच्च स्थान से पतित कर दिया था उनका भी उपचार करना था। इसके लिए स्वामी जी ने केवल सैद्धान्तिक ज्ञान नहीं दिया बल्कि व्यवहार में भी उसको कैसे लाया जाए ताकि वास्तविक उपचार उपस्थित होकर उन समस्याओं को दूर कर सके, इस पर भी ध्यान दिया। वेद और वैदिक शास्त्र भारतीय जनमानस में पैठे इस योजना के आवश्यक अंग थे। परन्तु उस समय में इन प्रयासों के लिए आवश्यक संस्थाओं की संख्या न के बराबर थी।

अतः स्वामी जी का एक प्रमुख कार्य वैदिक पाठशालाओं की स्थापना था। उसी क्रम में वे चाहते थे कि कासगंज में एक संस्कृत पाठशाला स्थापित हो। जब वहाँ के लोगों ने श्री महाराज को कासगंज आने का अनुरोध किया तो उन्होंने कहा कि हम बाद में आएँगे और तब यहाँ पर एक संस्कृत पाठशाला स्थापित करेंगे। जब स्वामी जी महाराज काशी से लौटकर ज्येष्ठ संवत् १९२७ में कासगंज आए तो उनकी इस योजना को मूर्त रूप दिया गया। कासगंज में स्वामी जी के आगमन के कुछ समय पश्चात् पाठशाला की स्थापना कर दी गई और अध्यापक के रूप में फर्रुखाबाद की पाठशाला से दुलाराम अध्यापक को बुलाया गया। स्वामी जी ने दुलाराम का नाम दिनेशराम रख दिया था।

यहाँ पाठशाला में क्या नियम बनाए थे वह पाठकों की रुचि के विषय हो सकते हैं अतः उन पर ध्यान देने का श्रम करें।

एक- केवल वही विद्यार्थी प्रवेश ले सकेंगे जो संध्या करना जानते हों।

दो- यहाँ वेद, अष्टाध्यायी, महाभाष्य और मनुस्मृति पढ़ाई जाये। यहाँ आप देखेंगे कि स्वामी जी ने पाठ्यक्रम में वेद को भी सम्मिलित किया है और सत्यार्थ प्रकाश के तृतीय समुल्लास में जहाँ पर पठन-पाठन का क्रम दिया है वहाँ भी स्पष्ट चारों वेदों के अध्ययन की बात कही है। पता नहीं कब किस रूप में यह बात स्थापित हुई कि आर्य गुरुकुलों में, पाठशालाओं में, स्कूलों में कॉलेजों में कहीं भी वेद की पढ़ाई की कोई व्यवस्था नहीं है।

तीन- कोई विद्यार्थी सूर्योदय से पहले उठकर संध्या न करे तो उसे दोपहर का भोजन न दिया जाए शाम को संध्या करने के पश्चात् ही भोजन दिया जावे।

चार- भोजन नगर में रहने वाले विद्यार्थियों को न दिया जाए केवल बाहर के विद्यार्थियों को दिया जाए। यहाँ यह बात स्पष्ट होती है कि इन पाठशालाओं का स्वरूप स्थानीय और रेजिडेंशियल दोनों प्रकार का था। स्थानीय बच्चे आएँगे और अपने घर चले जाएँगे उनको पाठशाला में भोजन की कोई आवश्यकता नहीं परन्तु बाहर से जो बच्चे आएँगे और वहाँ रहकर के अध्ययन करेंगे उनके लिए भोजन आदि की

आवश्यकता है अतः उनके लिए प्रबन्ध किया गया।

पाँच- एक कोठरी में हवन कुण्ड खुदवा कर विद्यार्थियों को सायं और प्रातः अग्निहोत्र की आज्ञा दी जाए।

धन के लिए दिलसुख राय गिरधारी लाल की दुकान पर रुपये २८०० पुण्यार्थ जमा थे। वह सबकी सम्मति से पाठशाला को दे दिए गए। इस सम्बन्ध में और जो प्रयास किए कुछ असफल भी हुए। कासगंज के तहसीलदार ने सोरों में गंगा तट पर पक्का घाट बनवाने के लिए रुपए इकट्ठे किए थे। उनसे कहा गया कि इसकी बजाए पाठशाला को यह धन प्रदान कर दिया जाए ताकि बच्चे पढ़ सकें। परन्तु कलेक्टर के आदेश पर जब इस बारे में राय ली गई तो पौराणिक मनः स्थिति के लोगों ने बालकों की संस्कृत पाठशाला से ज्यादा जरूरी गंगा के घाट को समझा। इस कारण वह धन संस्कृत पाठशाला को नहीं मिल सका।

स्वामी जी की जीवन कथा में अनेकानेक स्थलों पर उनके शारीरिक बल की झलक भी मिलती है। कासगंज की इस घटना का उल्लेख हम कर देते हैं। एक बार जब स्वामी जी कुछ लोगों के साथ जा रहे थे तो रास्ते में दो सांड भीषण रूप से आपस में लड़ रहे थे। लोग इधर-उधर होकर के दूर से निकल रहे थे। पर स्वामी जी उनके युद्ध को देखते रहे फिर अचानक आगे बढ़कर दोनों साण्डों को सींग से पकड़कर उन्होंने अलग कर दिया। सांड डरकर भाग गए। सभी लोग आश्चर्यचकित होकर स्वामी जी के ब्रह्मचर्य जनित बल की प्रशंसा करने लगे।

स्वामी जी अनेक बार जब मन आता था तो स्थान को छोड़कर के चले जाते थे। ऐसा ही कासगंज में हुआ एक दिन बिना किसी को सूचना दिए सूर्योदय से चार घड़ी पहले उन्होंने कासगंज को छोड़ दिया।

प्रस्तुति- नवनीत आर्य
नवलखा महल, उदयपुर

सत्यार्थ मित्र बनें

न्यास के कार्यों को गति प्रदान करने के लिए 5100 रु. (पाँच हजार एक सौ) वार्षिक का सहयोग प्रदान करें।

आपका मात्र ५१०० रुपये वार्षिक का सहयोग न्यास के कार्य को अद्वितीय गति प्रदान कर सकता है।

हमारे अत्यन्त आत्मीय बन्धुजन!

इस अपील को मेरी व्यक्तिगत अपील कहिए अथवा न्यास की अपील समझिए। यह आप तक पहुँचे और आपकी आत्मीयता हमें प्राप्त हो, इसी नाते हम प्रथम बार अर्थ सहयोग का निवेदन कर रहे हैं।

आपको यह जानकारी होगी ही कि नवीन, आकर्षक प्रकल्पों का निर्माण कर न्यास सहस्रों लोगों तक वैदिक संस्कृति के मूल तत्त्वों को अग्रप्रसारित कर रहा है। सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, उदयपुर द्वारा आर्यावर्त्त चित्रदीर्घा में वेद, वेद के प्रादुर्भाव, भारतीय ऋषियों के योगदान, योगिराज श्री कृष्ण और भगवान राम के पावन जीवन–चरित्र, मेवाड़ की माटी के गौरव महाराणा प्रताप, आर्यसमाज के रत्नों, भारत को स्वतन्त्रता दिलाने वाले क्रान्तिकारियों, सत्यार्थ प्रकाश चित्रावली एवं महर्षि दयानन्द के जीवन चरित्र के माध्यम से व संस्कार वीथिका के माध्यम से मानव निर्माण की पूरी योजना आगन्तुकों के सामने रखी जा रही है। इस क्रम में मानों महर्षिवर की संस्कार विधि मूर्तरूप में चित्रित हो गयी है।

वहीं उच्चतम गुणवत्ता के 3D थियेटर का निर्माण कर महापुरुषों के जीवन–चरित्र का दिग्दर्शन भी कराया जा रहा है। यहाँ यह अंकित करना आवश्यक है कि मुक्त हस्त से दिए हुए उदार अर्थ के सहयोग से भव्य संस्कार वीथिका परिसर व थियेटर का निर्माण माननीय सुरेश चन्द्र जी आर्य; अहमदाबाद और माननीय दीनदयाल जी गुप्त; कोलकाता के पवित्र सहयोग से हो पाया है एवं संस्कारों का निर्माण आर्यजनों के सामूहिक सहयोग से एकत्रित धन से हुआ है। परन्तु इनको गति देने के लिए, वर्ष में सारे प्रकल्प 365 दिन गतिशील रहें, इसके लिए आवश्यक है कि कुछ लोग आगे आएँ और प्रतिवर्ष अपना योगदान दें, इसीलिए आपसे यह निवेदन कर रहा हूँ। **मैं व्यक्तिगत रुप से अनुगृहीत होऊँगा अगर आप मात्र 5100 सौ रुपये प्रतिवर्ष देने का संकल्प लेंगे।** न्यास का एकाउन्ट नम्बर भी नीचे अंकित है। न्यास को प्रदत्त दान आयकर अधिनियम की धारा 80G के अन्तर्गत कर मुक्त है।

हमें आशा ही नहीं विश्वास है कि आप हमारी प्रार्थना को स्वीकार कर 5100 रुपये वार्षिक का यह अर्थ सहयोग प्रदान करने की कृपा करेंगे। **निश्चित मानिये आपके सहयोग से जो ऊर्जा और गति हमें मिलेगी वह लाखों लोगों तक वैदिक संस्कृति के उदात्त मूल्यों को सम्प्रेषित करने में मील का पत्थर साबित होगी।**

निवेदक- अशोक आर्य, अध्यक्ष-न्यास

चैक श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें। अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया, मेन ब्रांच, दिल्ली गेट, उदयपुर बैंक एकाउन्ट का विवरण : AC. No. : 310102010041518, IFSC CODE- UBIN 0531014, MICR CODE- 313026001 में जमा करा कृपया सूचित करें।

समाचार

आचार्य प्रेमभिक्षु जन्म शताब्दी समारोह

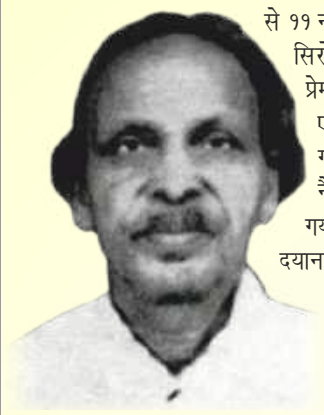

वैदिक स्वस्ति पन्था न्यास भीनमाल के वार्षिकोत्सव, जो कि ६ नवम्बर से ११ नवम्बर २०२४ तक अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर सिरोही में मनाया गया, उसमें आचार्य प्रेमभिक्षु जी की जन्मशताब्दी के अवसर पर एक स्मरणांजलि सत्र आयोजित किया गया। न्यास के प्रमुख आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक के सान्निध्य में यह समारोह मनाया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास; उदयपुर के अध्यक्ष श्री अशोक आर्य, जो कि महात्मा प्रेमभिक्षु जी के कनिष्ठ पुत्र भी हैं, ने की तथा मुख्य अतिथि के रूप में सरस्वती प्रकाशन के निदेशक डॉ. अरुण अग्रवाल दिल्ली रहे। कार्यक्रम का संचालन मथुरा के ही श्री पण्डित विपिन बिहारी जी ने किया।

आचार्य अग्निव्रत जी ने अपने और महात्मा प्रेमभिक्षु जी के सम्बन्धों को निरूपित करते हुए कहा कि मेरे जीवन के निर्माण का प्रारम्भ आचार्य प्रेमभिक्षु जी के सान्निध्य में हुआ। मैंने आचार्य जी को अत्यन्त नजदीक से देख उन्हें जैसा पाया वैसा एक भी व्यक्तित्व आर्य जगत् में नहीं देखा। सत्य के प्रति तीव्र आग्रह, अन्य योग्य व्यक्तियों के प्रति सम्मान के भाव, कार्य के प्रति अपार निष्ठा और हृदय में केवल और केवल वेद और ऋषि दयानन्द, सिद्धान्तों से कोई समझौता नहीं परन्तु मतभिन्नता रखने वाले व्यक्ति के प्रति भी सम्मान और श्रद्धा के भाव, यह सब महात्मा जी के व्यक्तित्व के अभिन्न अंग थे।

वे प्रातः काल ४:०० बजे से लेकर के रात्रि १०:०० बजे तक निरन्तर कार्य करने में लगे रहते थे। उनका जीवन पारदर्शी था, ईमानदारी उच्चतम स्तर की थी। आर्य जगत् को वैदिक परिवारों के निर्माण करने का सन्देश देकर आचार्य जी ने एक ऐसी शुरुआत की थी जिसके स्तुत्य परिणाम सामने आने लगे थे।

आज भी आर्य जगत् को अगर सफलता प्राप्त करनी है तो वैदिक परिवार शिविरों का आयोजन करना चाहिए। इस अवसर पर मुख्य अतिथि डॉक्टर अरुण अग्रवाल ने अपने बचपन के प्रसंग सुनाते हुए कहा था कि वे सब बच्चे शाम को वैदिक साधना आश्रम मथुरा जाया करते थे, मुख्य लक्ष्य तो होता था अपने ताऊजी श्रीमान बंशीधर जी अग्रवाल से मिलना। परन्तु वहाँ जाने पर आचार्य प्रेमभिक्षु के सान्निध्य में एक लघु सत्संग सा हो जाता था। उनकी शिक्षाएँ आज भी हमारे जीवन को एक दिशा दे रही हैं। ईश्वर ने उनको अनेक विधाओं से नवाजा था। वह एक अच्छे लेखक, सम्पादक, पत्रकार, वक्ता एवं कवि और उससे भी ऊपर बहुत अच्छे संगठन कर्त्ता थे। उन्होंने एक समय में मथुरा में ७० आर्य समाजों की स्थापना की थी। आज इस शताब्दी वर्ष के अवसर पर उनका स्मरण करके हम अपने जीवन को पवित्र ही करेंगे।

आचार्य प्रेमभिक्षु जी के कनिष्ठ पुत्र श्री अशोक आर्य जिन्होंने सत्यार्थ प्रकाश न्यास; उदयपुर के माध्यम से वैदिक सिद्धान्तों के प्रचार और प्रसार को नवीन आयाम दिए हैं उन्होंने कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए आचार्य प्रेमभिक्षु जी के अनेक संस्मरण प्रस्तुत किए और बताया कि उनके अपने जीवन को किस प्रकार से सचेष्ट रहकर के उन्होंने निर्माण किया और महर्षि दयानन्द जी के पथ का अनुसरणकर्त्ता बनाया। कार्यक्रम का संचालन कर रहे पंडित विपिन बिहारी जी का कहना था कि उनकी स्मृति में आचार्य जी से सम्बन्धित इतनी घटनाएँ हैं कि वे तीन दिन तक अगर उसका वर्णन करेंगे तो भी कम पड़ेंगे।

आचार्य जी की पुण्य जन्म शताब्दी के अवसर पर उनके पौत्र डॉ. प्रशान्त अग्रवाल ने आचार्य जी के लिखे भजन तथा उनको अत्यधिक प्रिय भजनों के एक संग्रह को अपनी आवाज दी, जिसका विमोचन डॉ. सत्यपाल सिंह (पूर्व केन्द्रीय मंत्री; भारत सरकार) द्वारा किया गया। इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उप प्रधान श्री प्रकाश आर्य, श्री अमरचन्द (मथुरा) आचार्य प्रेमभिक्षु जी के पुत्र श्री अशोक आर्य के परिवार के सदस्यगण तथा उनके समधी श्री विनोद जैन का परिवार भी उपस्थित था।

आचार्य अग्निव्रत जी के अतिरिक्त कार्यक्रम में उपस्थित अन्य आर्यजनों ने भी महात्मा जी के जीवन से सम्बन्धित संस्मरण सुनाए और सभी ने यह भावना भी जताई कि हम उनके जीवन से प्रेरणा लेकर के अपने पथ को प्रशस्त करेंगे। शान्ति पाठ के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

प्रेम के प्रवाहक, परिवारों के सुधारक ।
हों दिव्य गुण जीवन में, तुम सत्य के प्रसारक ।।
दुर्गुणों को दूर करके, सद्गुणों को धार करके ।
हर व्यक्ति बन सके बस, सद्धर्म का प्रचारक ।।
यह दिव्य स्वप्न था बस, हर कार्य का निर्धारक ।
मन में था दयानन्द बस, उसके व्रतों के पालक ।।
कथनी और करनी में ऐक्यभाव धारक ।
जीवन किया समर्पित, माँ आर्यसमाज विस्तारक ।।
जन्म की शताब्दी पर आज भी दिलों में।
प्रेरणा के पुंज बनकर, संस्कारों के संवाहक ।।
पावन चरित तुम्हारा, करता है नित प्रकाशित ।
नैराश्य के क्षणों में आशा के तुम दिवाकर ।।
अब ढूढती निगाहें, आते नजर कहीं ना।
मथुरा का वेदमन्दिर, है आपका स्मारक ।।
जीवन का व्रत निभाने, सुखों को लात मारी ।
सबके लिए जिये तुम, थे प्रेम के विस्तारक ।।
संस्कार आपके हैं, शिक्षा भी आपकी है।
इस वास्ते जुटे हैं, आर्यत्व के हो धारक ।।
जो कुछ दिया है तुमने, वह है अमूल्य थाती ।
उसको लगा हृदय से, हम हैं ऋणी, हे पालक ।

- अशोक आर्य

'वेदार्थ विज्ञान संगोष्ठी' सम्पन्न

श्री वैदिक स्वस्ति पन्था न्यास, भागलभीम, भीनमाल (राजस्थान) के तत्त्वावधान में सिरोही नगर के 'विजयपताका महातीर्थ' नामक जैन धर्मशाला में तीन दिवसीय 'वेदार्थ विज्ञान संगोष्ठी' का आयोजन उत्साह के साथ सम्पन्न हुआ। आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक इस संगोष्ठी के प्रमुख सूत्रधार तथा मुख्य वक्ता थे।

सम्पूर्ण कार्यक्रम की अध्यक्षता पूर्व केन्द्रीय मन्त्री एवं गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के कुलाधिपति डॉ. सत्यपाल सिंह ने की। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में राजस्थान के पूर्व लोकायुक्त न्यायमूर्ति श्री सज्जन सिंह कोठारी; सनातन धर्म फाउण्डेशन, नई दिल्ली के संस्थापक अध्यक्ष श्री श्री श्री नारायण आनन्द गिरि जी महाराज तथा डॉ. अरुण कुमार अग्रवाल, नई दिल्ली ने भाग लिया।

इस अवसर पर न्यास के संस्थापक प्रमुख वैदिक वैज्ञानिक आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक, श्री विशाल आर्य एवं डॉ. मधुलिका आर्या ने वेद एवं निरुक्त शास्त्र के अनेक ऐसे रहस्यों का उद्घाटन किया, जो वर्तमान काल में बड़े-बड़े वैदिक विद्वानों व विदुषियों के लिए भी अज्ञात व आश्चर्यप्रद थे। इन शास्त्रों के वैज्ञानिक रहस्य वैज्ञानिकों के लिए कुतूहलजनक थे। आचार्य अग्निव्रत ने वेदोत्पत्ति के समय किसी भी लोक की स्थिति एवं उस समय उस लोक पर उत्पन्न मनुष्यों के बौद्धिक, मानसिक एवं शारीरिक स्तर का वर्णन करते हुए उनके द्वारा वेद मन्त्रों के ग्रहण करने की वैज्ञानिक प्रक्रिया का वर्णन किया। न्यास के प्राचार्य श्री विशाल आर्य ने वैदिक रश्मि विज्ञान तथा उपप्राचार्या डॉ. मधुलिका आर्या ने निघण्टु पद के निर्वचन की वैज्ञानिकता का अप्रत्याशित वर्णन किया।

नाइजर देश से पधारे एक मिश्र लिपि विशेषज्ञ एवं पुराततत्त्वविद् सुलेमन गरबा ने अपना शोध फ्रेंच भाषा में प्रस्तुत किया, जिसका हिन्दी अनुवाद कर्नल पूरन सिंह राठौड़ (जयपुर) ने किया। इस कार्यक्रम में वैज्ञानिक अतिथि के रूप में वरिष्ठ रक्षा वैज्ञानिक डॉ. रामगोपाल (पूर्व निदेशक डी.आर.डी.ओ.), डॉ. भूप सिंह जी (भिवानी), प्रो. संदीप कुमार सिंह (सोनीपत), डॉ. आशुतोष कुमार (बोधगया), प्रो. वसन्त कुमार मदनसुरे (पुणे), प्रो. दीप्ति विद्यार्थी ने अपने-अपने विचार रखे। नीदरलैंड से पधारी श्रीमती राधा बिहारी आर्या, फ्रांस से श्री सोमनाथ शर्मा और यू.एस.ए से निश्चल याज्ञिक ने भी आचार्य जी के कार्य पर अपने विचार व्यक्त किये।

इस अवसर पर कामारेड्डी तेलंगाना से स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती, कुरुक्षेत्र से सन्त विदेह योगी, बनारस से आचार्या नंदिता शास्त्री एवं कवि बद्री विशाल, तिरुपति से प्रो. सीहेचू नागराजू, अजमेर से डॉ. मोक्षराज आर्य, भटिण्डा से श्री ऋषिराज आर्य, दिल्ली विकास प्राधिकरण की निदेशिका श्रीमती अलका आर्या, असम से एडिशनल एस.पी. श्री सुमनदास, मुम्बई से सी.ए. श्री सुरेश जैन, गाजियाबाद से स्वामी ओमानन्द आदि वेद एवं विज्ञान प्रेमी सज्जन उपस्थित हुए।

इस अवसर पर आचार्य प्रेमभिक्षु जन्म शताब्दी के उपलक्ष्य में आचार्य प्रेमभिक्षु व्यक्तित्व एवं कृतित्व नामक सत्र का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के अध्यक्ष श्री अशोक आर्य ने की तथा इसके मुख्य वक्ता आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक रहे। इस सम्पूर्ण कार्यक्रम में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान श्री प्रकाश आर्य, आर्य प्रतिनिधि सभा; राजस्थान के प्रधान श्री किशनलाल गहलोत, कोषाध्यक्ष श्री जय सिंह गहलोत एवं श्री योगी मलिक (सोनीपत) विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित रहे।

इस अवसर पर आचार्य अग्निव्रत द्वारा प्रणीत निरुक्त का वैज्ञानिक भाष्य- 'वेदार्थ विज्ञानम्', 'वैदिक रश्मिविज्ञानम्', 'सृष्टि संचालक' तथा वेदादि शास्त्रों पर किए गए आक्षेपों के उत्तर में लिखी गई पुस्तक 'अभेद्य वेद' के साथ-साथ डॉ. भूप सिंह भिवानी का क्रान्तिकारी ग्रन्थ 'वैदिक संस्कृति की वैज्ञानिकता' आदि सद्यः प्रकाशित ६ ग्रन्थ सबके आकर्षण का केन्द्र रहे। आचार्य जी ने सभी विद्वानों को 'वेदार्थ विज्ञानम्' नामक निरुक्त का वैज्ञानिक भाष्य एवं 'वैदिक रश्मिविज्ञानम्' सहित अपना साहित्य निःशुल्क भेंट किया। महामण्डलेश्वर सहित सभी वक्ताओं ने आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक, श्री विशाल आर्य एवं डॉ. मधुलिका आर्या के कार्यों की भूरि-भूरि प्रशंसा की। अन्त में न्यास के मन्त्री डॉ. टी. सी. डामोर जी ने सभी अतिथियों, श्रोताओं एवं कार्यकर्त्ताओं को धन्यवाद दिया। उन्होंने न्यास की भावी योजनाओं की संक्षिप्त रूपरेखा भी प्रस्तुत की।

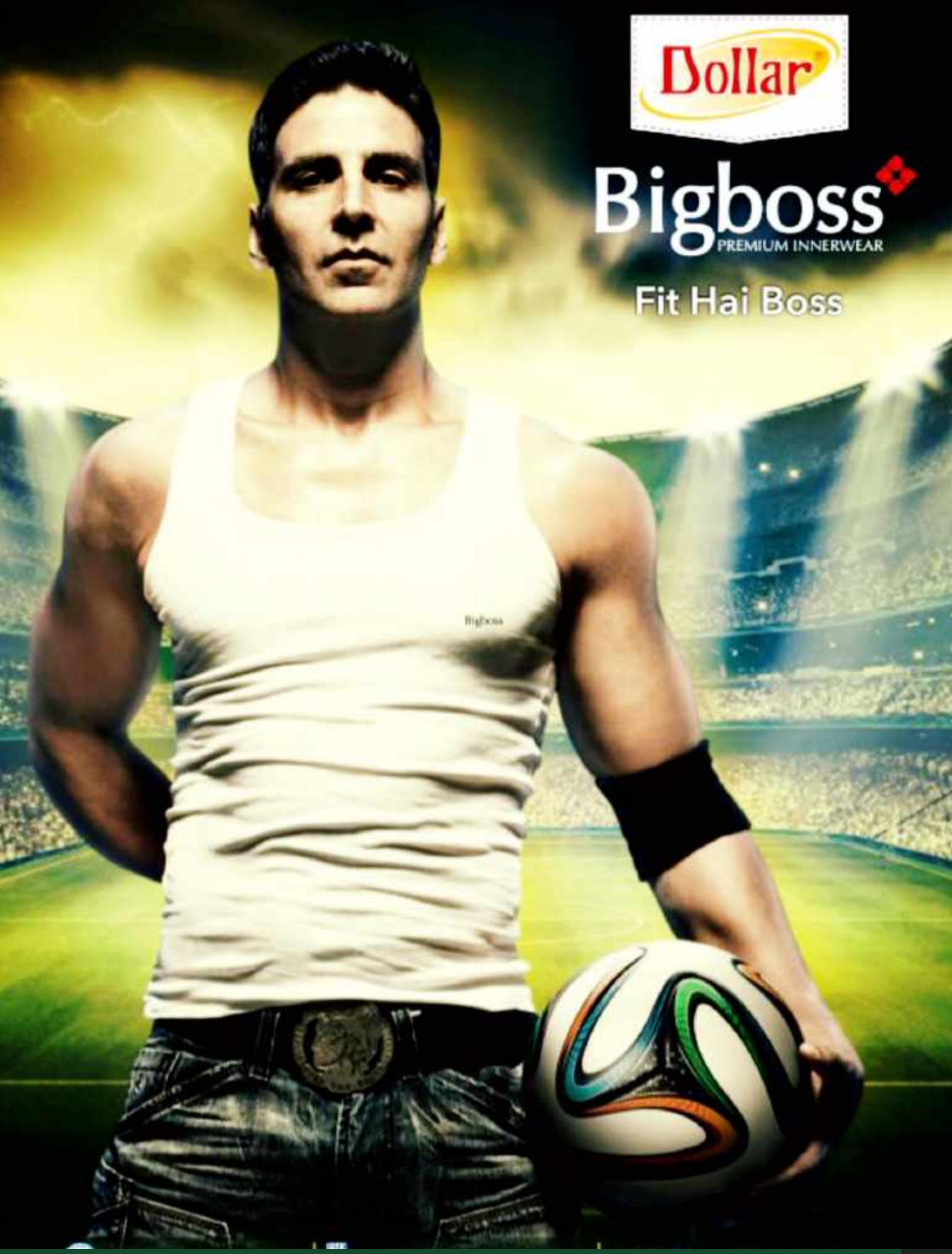
Dollar
Bigboss
PREMIUM INNERWEAR
Fit Hai Boss

RNI Registration No. RAJHIN/2012/47777 December-2024 Postal Registration No. RJ/UD/29-107/2021-2023

विना चेतन परमेश्वर के निर्माण किये जड़ पदार्थ स्वयं आपस में स्वभाव से नियमपूर्वक मिलकर उत्पन्न नहीं हो सकते। इस वास्ते सृष्टि का कर्त्ता अवश्य होना चाहिये। जो स्वभाव से ही होते हों तो द्वितीय सूर्य्य, चन्द्र, पृथिवी और नक्षत्रादि लोक आप से आप क्यों नहीं बन जाते हैं?

- सत्यार्थ प्रकाश द्वादश समुल्लास पृष्ठ ४०१

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा निदेशक- मुकेश चौधरी, चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित प्रेषण कार्यालय- श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर 313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य

मुद्रण दिनांक- प्रत्येक माह की ३ तारीख | प्रेषण दिनांक- प्रत्येक माह की ७ तारीख | प्रेषण कार्यालय- मुख्य डाकघर, चेतक सर्कल, उदयपुर